ISSN-2321-3981

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

चैत्र २०८३ अप्रैल २०२६

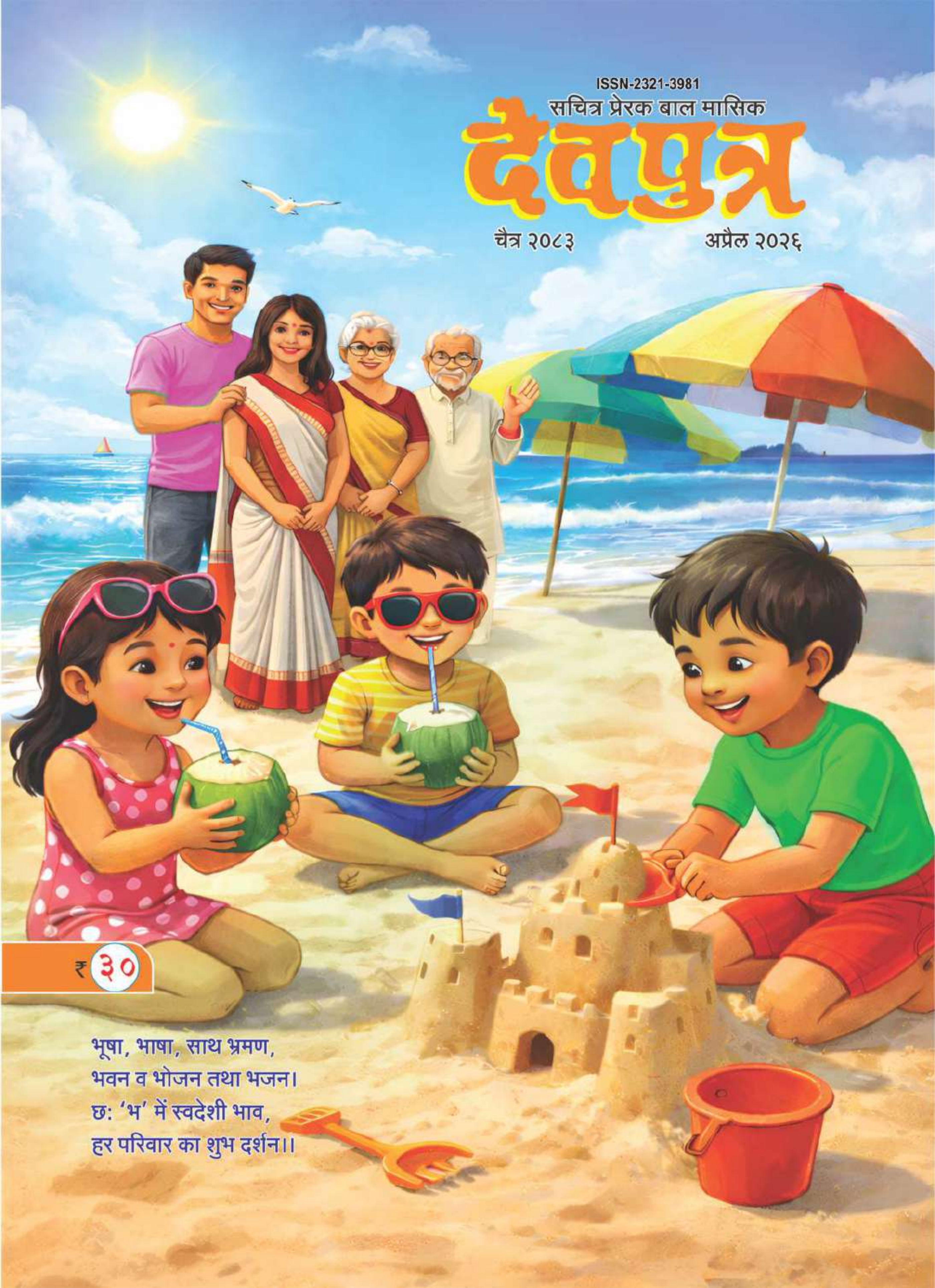

₹ ३०

भूषा, भाषा, साथ भ्रमण,
भवन व भोजन तथा भजन।
छ: 'भ' में स्वदेशी भाव,
हर परिवार का शुभ दर्शन।।

बाल कविता

गन्ने का रस

– तरुण कुमार दाधीच

गन्ने का रस वाला आया, बच्चों का मन ललचाया।
फिर दादाजी को बतलाया, उनका चेहरा खिल आया।।

दादीजी बच्चों को ले आई,
जहाँ खड़ा रस वाला भाई,
तीन गिलास रस की भराई
उसने एक-एक कर थमाई।

सब बच्चों ने गिलास उठाई,
फिर अपने होंठों से लगाई,
रस जो पिया तरावट आई
गर्मी से कुछ राहत पाई।

ताजे रस में नींबू डला था,
और मसाला भी गिरा था,
बर्फ के टुकड़े तैर रहे थे
पीने वाले आ जा रहे थे।

बच्चे दौड़कर घर में आए,
उन्हें देख दादी मुस्काए,
मूँछें कहाँ सफेद बनाए
बोले गन्ने का रस पी आए।

– उदयपुर (राजस्थान)

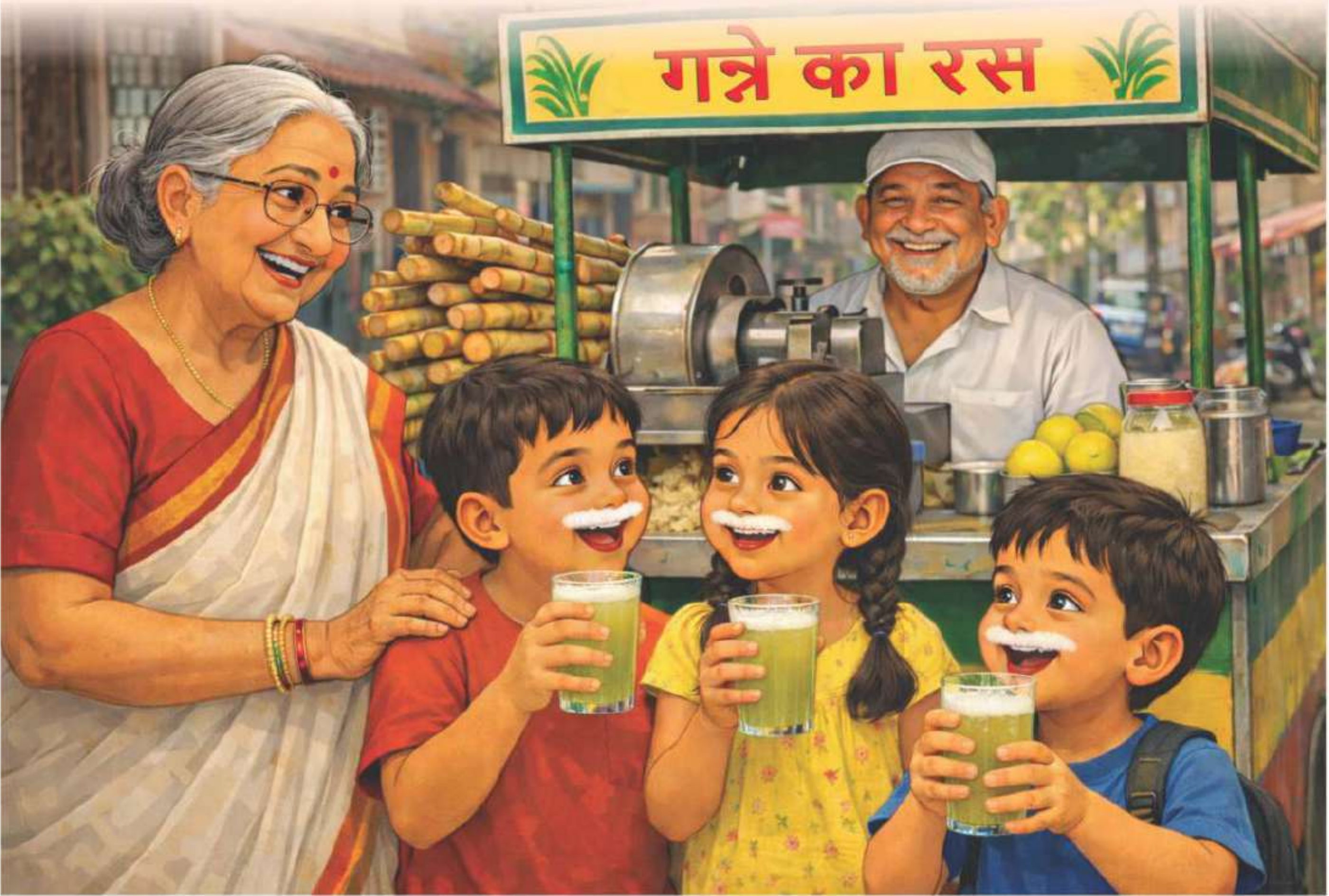

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

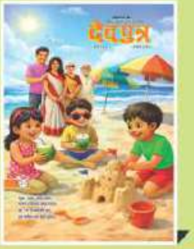

चैत्र	२०८३	वर्ष	४६
अप्रैल	२०२६	अंक	१०

संपादक
गोपाल माहेश्वरी

प्रबंध संपादक
नारायण चौहान

मूल्य

एक अंक	:	३० रुपये
वार्षिक	:	२५० रुपये
पन्द्रहवर्षीय	:	२५०० रुपये
सामूहिक वार्षिक	:	१८० रुपये

(कम से कम १० अंक लेने पर)

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

संपर्क
४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००४३९

स्वामी सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर, म. प्र. के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक राकेश भावसार द्वारा अजीत प्रिन्टर्स एंड पब्लिशर्स, २०-२१, प्रेस कॉम्प्लेक्स, ए. बी. रोड, इन्दौर, म. प्र. से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, नवलखा, इन्दौर, म. प्र. से प्रकाशित।

e-mail:
व्यवस्था विभाग
devputraindore@gmail.com
संपादन विभाग
editordevputra@gmail.com

अपनी बात

प्यारे भैया-बहिनो!

दो प्रश्न जैसे बचपन के अनिवार्य से प्रश्न है और उनके उत्तर हर दिन देते हुए भी उत्तर देने वालों के मन में उतनी ही आशंका भरते हैं। जितनी किसी को अपनी नौकरी के लिए इन्टरव्यू (साक्षात्कार) देते समय जानते तो आप भी है हीं वे प्रश्न है माँ से- "खाने में क्या बना है?" दूसरा पिता से- "क्या लाए हैं?" आपके इन दो मासूम से सहज प्रश्नों का उत्तर गढ़ना किसी भी माता-पिता के लिए वे कठिन चुनौतियाँ है। जिन्हें वे हमेशा पूरा करने के लिए मुस्कुराते हुए तैयार रहते हैं। कई बार होता है जब यह मुस्कुराहट उन्हें प्रयासपूर्वक लाना पड़ती है, कि आप उदास या निराश न हो जाओ। पर यह प्रश्न पूछते आपका बचपन और उत्तर देते उनका जीवन बीतता रहता है।

आज के अधिकतर बच्चों को शिकायत होती है कि माता-पिता हमें ठीक से समझ नहीं पाते। इस शिकायत को पाला बदलकर, उलटकर देखो हम कितना समझते हैं अपने माता-पिता को। अपनी समस्याएँ, अपेक्षाएँ जितनी सरलता से खुलेपन से आप उनके सामने रख सकते हैं उन्हें बताने को आतुर रहते हैं वे अपनी समस्याएँ, अपेक्षाएँ कितनी सावधानी से, बहुत छुपाते, थोड़ा-बहुत प्रकट कर पाते हैं फिर भी वे जब आपके द्वारा अनसमझी रह जाती है तो उन्हें कैसा लगता होगा?

बच्चे माता-पिता की आँखों के तारे होते हैं तो माता-पिता की आँखों में बसी, आशा, निराशा, आनंद की चमक और आँसुओं की नमी से भी उन्हीं आँखों में बसे आप बच्चों का परिचय होना चाहिए।

आपने श्रवण कुमार की कथा सुनी है जो कावड़ में बैठाकर अपने माता-पिता को तीर्थयात्रा करवाता है। अब कल्पना करो आपकी दो आँखें कावड़ की दो टोकरियाँ हैं और आपका विवेक कावड़ का डण्डा। इसमें माता-पिता की आशा, अभिलाषा, आकांक्षा रखो और अपनी जीवन यात्रा करो। आप अपने लिए ही यह यात्रा कर रहे होंगे क्योंकि माता-पिता की आशा, अभिलाषा, आकांक्षा आप ही होते हो। माता-पिता के हाथों के थैलों में अपने मतलब का सामान ढूँढने के साथ-साथ आगे बढ़कर उनसे झोला ले लेने वाले बच्चे, झोले से कुछ पाएँ न पाएँ माता-पिता के मन से सर्वोत्तम उपहार उनका आशीर्वाद अवश्य पा सकेंगे।

आपका
बड़ा भैया

web site - www.devputra.com

।। अनुक्रमणिका ।।

कहानी

- भारतीय कुटुंब -कीर्ति श्रीवास्तव ०८
- घमंडी मंकू को शिक्षा -रेखा शाह आरबी २०
- चैंपियन दादी -पूनम पांडे २६
- जैसी हूँ वैसी अच्छी -ओमप्रकाश क्षत्रिय 'प्रकाश' ३४

छोटी कहानी

- गाँव दर्शन -प्रगति त्रिपाठी ०५
- करतल योग -संदीप पांडे 'शिष्य' १५
- उतर गया बुखार -डॉ. राजीव गुप्ता २४
- शरारती बालक -माणक तुलसीराम गौड़ ४२
- दीपू का मोबाइल -अर्चना त्यागी ४६

चित्रकथा

- ये कैसा उपहार? -देवांशु वत्स २३
- लाल बुझक्कड़ काका... -देवांशु वत्स ४१

आलेख

- बाबा साहेब डाकटिकटों.. -उमेश कुमार नीमा १६

प्रेरक प्रसंग

- सत्य से सहमत -सुरेन्द्र अग्निहोत्री ०७
- प्रजापालक -महेश परमार ४०

नाटक

- लक्ष्य की ओर -उमेश कुमार चौरसिया २८
- बात में से बात -ललितनारायण उपाध्याय ३७

कविता

- गन्ने का रस -तरुण कुमार दाधीच ०२
- ग्राम देवता -गोपाल माहेश्वरी ०६
- मस्त कलंदर -इन्द्रजीत कौशिक ०७
- सौर मंडल की सैर -रिंकल शर्मा ४५
- आम के बच्चे आए -राम करन ४९
- आम ने देखा सपना -सुशीला साहू ५१

स्तंभ

- बाल साहित्य की धरोहर -डॉ. नागेश पांडेय 'संजय' १२
- छ: अँगुल मुस्कान - २२
- बच्चे विशेष -रजनीकांत शुक्ल ३२
- शिशु महाभारत -मोहनलाल जोशी ३६
- पुस्तक परिचय - ४४

संस्थान विशेष

- पर्वतारोहण प्रशिक्षण केन्द्र -डॉ. रवीन्द्र कान्हेरे १९

बौद्धिक क्रीडा

- पहेलियाँ -डॉ. श्याम मनोहर व्यास ०६
- अनूठे सच -संकेत गोस्वामी ११
- बूझो तो जानें -श्याम सुन्दर तिवाड़ी १४
- एक सवाल -संकेत गोस्वामी १८
- खोजो तो जानें -चाँद मोहम्मद घोसी ३१
- बौद्धिक व्यायाम -देवांशु वत्स ३१
- सांस्कृतिक पहेलियाँ -गोविन्द भारद्वाज ४३
- इस तरह बनाओ -संकेत गोस्वामी ४७
- भूल भुलैया -चाँद मोहम्मद घोसी ४९

क्यू आर कोड से भी जमा कर सकते हैं आप देवपुत्र का सदस्यता शुल्क

क्यू आर कोड से शुल्क जमा करने पर स्क्रीन शॉट, अपना नाम, पूरा पता, पिनकोड सहित एवं मोबाइल नम्बर, प्रबंध संपादक श्री. नारायण चौहान के व्हाट्सएप नंबर 8103700552 पर अवश्य प्रेषित करें।

क्या आप देवपुत्र का शुल्क नेट बैंकिंग से जमा करा रहे हैं? तो कृपया ध्यान दें!

देवपुत्र का शुल्क इसकी प्रकाशन संस्था - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** के खाते में ही जमा कराएँ।

विवरण इस प्रकार है- खातेदार - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** बैंक - **स्टैट बैंक ऑफ इण्डिया, एम.वाय.एच.परिसर शाखा, इन्दौर** खाता क्रमांक-**38979903189 चालू खाता (Current Account) IFSC- SBIN0030359** राशि जमा करने के बाद जमा पर्ची को देवपुत्र के ई-मेल **ID devputraindore@gmail.com** पर अवश्य भेजिए। नेट बैंकिंग में प्रेषक के कॉलम में पहले अपना स्थान लिखें फिर **सरस्वती शिशु मंदिर** का संक्षेप लिखें तो सन्देश ठीक आता है। उदाहरण के लिए -सरस्वती शिशु मंदिर, संजीत मार्ग, मंदसौर ने देवपुत्र का शुल्क भेजा तो उन्हें प्रेषक में लिखना चाहिए - "**मन्दसौर संजीत मार्ग SSM**" आशा है सहयोग प्रदान करेंगे।

गाँव दर्शन

– प्रगति त्रिपाठी

आरू और इंदू के शाला में गर्मियों की छुट्टियाँ होने वाली थी। इस बात से दोनों बहुत प्रसन्न थे। शाला से घर पहुँचते ही दोनों एक स्वर में बोल पड़े– ''माँ! माँ... कल से हमारी गर्मियों की छुट्टियाँ प्रारंभ हो जाएँगी। आप पिताजी से कहना इस बार हमें मुंबई घुमाने ले जाए।''

''वाह! ये तो बहुत अच्छी बात है लेकिन मुंबई ही क्यों?''

''मुंबई में घूमने के लिए बहुत सारे स्थान हैं। मेरा मित्र निकुंज पिछली गर्मियों की छुट्टियों में मुंबई घूमने गया था वही बता रहा था।'' आरू बोला।

''अच्छा ठीक है, पिताजी को आने दो। वही बताएँगे कि हम इन छुट्टियों में कहाँ जाएँगे।''

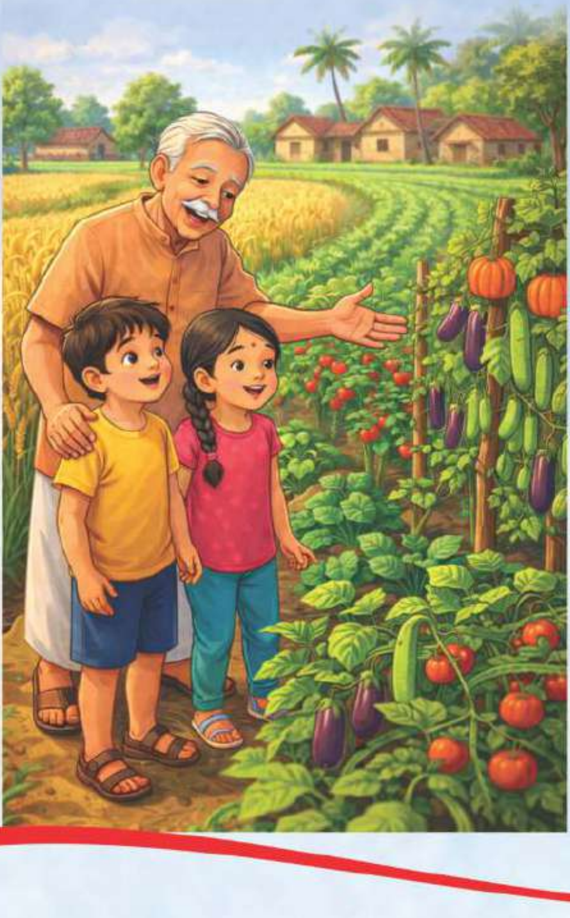

''ठीक है माँ।'' दोनों ने एक साथ कहा।

दोनों पिताजी के आने की प्रतीक्षा करने लगे।

''इस बार मैं भी कक्षा में सबको मुंबई शहर का किस्सा सुनाऊँगा।'' आरू उत्साहित होते हुए बोला।

शाम को विनय जी कार्यालय से घर आए तो आरू ने पिताजी का बैग ले लिया और इंदू ने पिताजी का कोट।

''क्या बात है? आज तो तेरी बड़ी सेवा हो रही है।'' पिताजी ने मुस्कुराते हुए कहा।

''बच्चे इस बार की छुट्टियों में मुंबई घूमने जाना चाहते हैं।'' माँ ने बच्चों के मन की बात कह दी।

''देखो बच्चो!.... इस बार हम गाँव जाएँगे क्योंकि गाँव में तुम्हारे दादाजी अस्वस्थ हैं। आज सुबह ही बड़े पिताजी का फोन आया था। मुंबई फिर कभी चलेंगे।'' पिताजी ने कहा।

''ओह! इस बार हमारी छुट्टियाँ बेकार जाने वाली है। गाँव में देखने के लिए है ही क्या?'' आरू ने मन ही मन सोचा। इंदू का भी वही हाल था। दोनों बच्चे उदास हो गए।

''अरे बच्चो!.. ऐसे उदास न हो। गाँव में भी बहुत कुछ देखने जानने को हैं। चलो, इस बार तुम लोगों को गाँव दर्शन करवाऊँगा।''

एक–दो दिन बाद विनय जी सपरिवार गाँव चले गए। दादाजी परिवार का साथ और सेवा से धीरे–धीरे बिलकुल ठीक हो गए लेकिन विनय जी कार्यालय के काम से वापस शहर चले गए।

''क्या बात है बच्चो! ऐसे गुमसुम से क्यों बैठे हैं?'' दादाजी ने बच्चों से पूछा।

''दादाजी हम बोर हो रहे हैं।'' दोनों ने एक साथ कहा।

''हम तुम्हें उबने नहीं देंगे। चलो मेरे साथ।'' दादाजी ने कहा।

''हम कहाँ जा रहे हैं दादाजी?'' इंदू ने पूछा।

''मैं तुम दोनों को ऐसी चीज दिखाने वाला हूँ जो तुम शहर में नहीं देख पाओगे।''

दादाजी के बात से दोनों बहुत उत्साहित हो गए।

दादाजी ने उन्हें खेत लेकर गए जहाँ बच्चों को उन्होंने गेहूँ की बालियाँ, चने के पौधे, कई तरह की सब्जियाँ, मटर की फलियाँ और भी कई अनाज और पौधे दिखाएँ साथ ही उनके बारे में जानकारी भी दी।

''वाह! दादाजी आपने तो हमारे विद्यालय का प्रोजेक्ट बनवा दिया। हमें छुट्टियों में वेजिटेबल फार्म का निरीक्षण करना था। ये हमारा गृहकार्य था।''

दूसरे दिन दादाजी ने बच्चों को तालाब, पोखर, आम के बागीचे दिखाएँ। बच्चों का गाँव में और दादाजी के साथ खूब मन लग गया था। दादाजी प्रतिदिन कुछ नया दिखाते और उसके बारे में बताते।

बच्चों की छुट्टियाँ समाप्त होने पर सभी गांव से वापस लौट आए। शाला में जब शिक्षक ने बच्चों से पूछा कि उन्होंने गर्मी की छुट्टियाँ किस तरह से बिताई तो सभी ने अपना-अपना अनुभव बताया। आरू और इंदू ने भी बड़े उत्साह से गाँव से संबंधित बातें बताई।

– बैंगलूरू

ग्राम देवता

– गोपाल माहेश्वरी, इन्दौर

ग्राम देवता तुम्हें प्रणाम।
स्वच्छ हवा पानी के धाम।।
सुन्दर हरियाली पोशाक।
देते प्रसाद अन्न, फल, शाक।।
दूध, दही, घी, छाछ प्रदाता।
तुमसे जनजीवन सुख पाता।।
प्रकृति माँ के पुत्र ललाम।
बिना तुम्हारे चले न काम।।

पहेलियाँ

पहेलियाँ

– डॉ. श्याम मनोहर व्यास

(१) तीन नयन पर शंकर नहीं,
जटा है पर जोगी नहीं।
दूध है पर गाय नहीं,
जरा नाम बताओ सही।।

(२) तीन अक्षर का मेरा नाम,
धड़ कटे तो मोर कहाऊँ।
आदि कटे तो टर-टर करूँ,
पूरा बने तो चल दिखलाऊँ।।

(३) बीच कटे तो काल,
अंत कटे तो काम।
आदि कटे तो जल,
लगाओ बुद्धि का बल।।

(४) पानी का मटका,
पेड़ पर अटका।
हवा हो या झटका,
उसको नहीं खटका।।

(५) ऊपर से हरा, अन्दर से लाल।
मीठा रस भरा, पर मोटी खाल।।

– उदयपुर (राजस्थान)

उत्तर – १) नारियल। २) मोटर। ३) काजल। ४) टमाटर। ५) तरबूज।

मस्त कलंदर

– इन्द्रजीत कौशिक

एक महल था गोपी चंदर
उस पर रहते थे कुछ बंदर,
उछल–उछल करते थे मौज
बढ़ती जाती थी यह फौज।

ऐनक लेकर पेड़ पे चढ़ते
नई कहानी रोज ही गढ़ते,
मोबाइल अगर दिख जाता
पल भर में गायब हो जाता।

छिन गया सबका सुख चैन
भर आते थे सबके नैन,
सर से ऊपर पानी आया
एक उपाय सबने लगाया।

एक लंगूर कहीं से मंगाया
उसने अपना खेल दिखाया,
रफूचक्कर हो गए सब बंदर
तब नाचे सब, मस्त कलंदर।

– बीकानेर (राजस्थान)

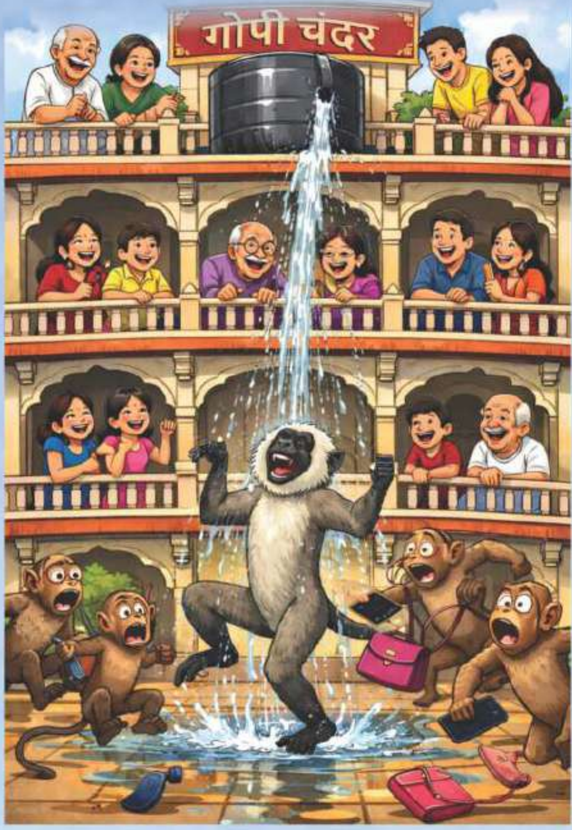

प्रेरक–प्रसंग

सत्य से सहमत

– सुरेन्द्र अग्निहोत्री

सम्राट समुद्रगुप्त अपनी चिंताओं से मुक्त होने के लिए वह वन की ओर चल पड़े। सम्राट अपने सबसे प्रिय श्वेत श्याम वर्ण अश्व पर बैठे जा रहे थे। अचानक सुरीली आवाज सुनाई दी। बंसी की आवाज इतनी मीठी थी कि उनकी गति थोड़ी धीमी हो गई और उन्होंने अपने घोड़े को उस दिशा की ओर मोड़ दिया।

कुछ दूर जाकर उन्होंने देखा कि पहाड़ी के झरने के पास वृक्षों के झुरमुट तले एक चरवाहा प्रसन्न चित्त बंसी बजाते हुए नृत्य कर रहा था। उसकी भेड़ें उसके पार सम्राट ने युवक से पूछा– तू तो ऐसा आनंदित है जैसे तुझे कोई साम्राज्य मिल गया हो ? उत्तर में युवक हँसता हुआ बोला– भाई जी! आप कृपया मेरे लिए ऐसी कि भगवान मुझे कोई साम्राज्य दे, क्योंकि मैं तो अभी भी सम्राट हूँ पर साम्राज्य मिलने पर कोई व्यक्ति सम्राट नहीं रह सकता है ? युवक की बातें सुनकर सम्राट चकित हुए।

उनकी हैरानी को भाँपकर युवक कहने लगा– महाशय, एक व्यक्ति संपत्ति से नहीं बल्कि स्वतंत्रता से सम्राट होता है। और मेरे पास स्वतंत्रता के अलावा कोई भी है। भगवान के स्वरूप के बारे में चिंतन करने के लिए मेरे पास मन है। प्रभु भक्ति करने के लिए मेरे पास निर्मल हृदय है। चाँद मुझ पर भी उतनी ही चाँदनी बर कि सम्राट पर और प्रकृति के आँगन में खिले फूलों की सुगंध भी मुझे सम्राट के कम नहीं मिलती है। फिर महाशय आप ही बताएँ, सम्राट के पास ऐसा क्या है जो है? इन बातों को सुनकर सम्राट समुद्रगुप्त ने कहा– प्रिय युवक, तुम सही कहते हो। बस मेरा यही निवेदन है कि जब तुम गाँव जाओ तो सबसे यही कहना।

– लखनऊ (उ. प्र.)

भारतीय कुटुंब

– कीर्ति श्रीवास्तव

दीपू के शाला से आते ही रोज की तरह उसकी माँ ने उसका शाला का बेग लिया और सबसे पहले उसका खाने का डिब्बा निकाला।

''ये क्या दीपू! आज तुम अपना पूरा खाना बचा कर ले आये, कुछ खाया ही नहीं।'' माँ ने डिब्बे को किचन में रखते हुए बोला।

पर दीपू ने कुछ जवाब नहीं दिया। वो सोफे पर जाकर बैठ गया।

''ये क्या! ना तो जूते उतारे, ना ही हाथ–पाँव धोये। क्या हुआ स्वास्थ्य तो ठीक है ना?''

''हाँ माँ! सब ठीक है। बस आज भोजन करने का मन नहीं हुआ।''

''अच्छा चलो, कपड़े बदल आओ फिर भोजन करते हैं।''

''नहीं माँ! मुझे भूख नहीं है।''

''ये क्या बात हुई? दीपू तुम अब १२ वर्ष के हो गए हो। अच्छे से खाओगे नहीं तो सेहत कैसे बनेगी और पढ़ोगे–लिखोगे कैसे?''

''नहीं माँ! आज मेरा मन नहीं है मैं सोने जा रहा हूँ।''

''हे भगवान! आज इसे क्या हो गया? ये जब सोकर उठेगा तब बात करूँगी।'' दीपू की माँ अपने मन में सोच रही थीं।

''दीपू! उठो, चलो मटर छीलने में मेरी सहायता कर दो।''

''ठीक है माँ! आता हूँ।''

''दीपू मुझे पता है कोई बात है जो तुम्हें परेशान कर रही है। बताओ क्या बात है? हो सकता है मेरे पास तुम्हारी परेशानी दूर करने का कोई उपाय हो।''

''उसका कोई उपाय नहीं है, फिर भी मैं आपको बता देता हूँ। आज शाला में दीदी ने बताया कि हमारी कक्षा को 'भारतीय कुटुंब व्यवस्था' विषय पर कहानी लिखनी है और यह एक प्रतियोगिता भी होगी।''

''हाँ, तो उसमें क्या समस्या है? और कोई

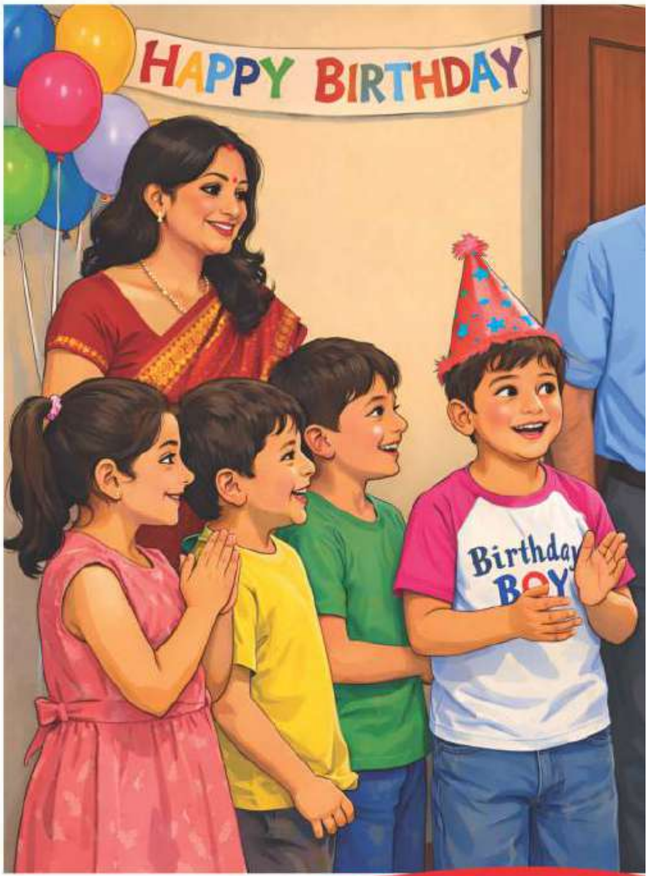

परेशानी हुई तो मैं सहायता कर दूँगी।''

''माँ! भारतीय कुटुंब व्यवस्था मतलब एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था जिसमें परिवार संयुक्त रूप से रहता है, जिसमें कई पीढ़ियों के लोग एक साथ रहते हैं और आपसी सहयोग, प्रेम, सम्मान, और जिम्मेदारियों के साथ एक-दूसरे का ध्यान रखते हैं। जिससे पीढ़ी दर पीढ़ी संस्कारों, ज्ञान और परंपराओं, को सीखती है, साथ ही परिवार के सभी सदस्यों में एकता की भावना भी आती है। ऐसा हमारी शिक्षिका ने बताया है।''

''हाँ! यही तो होता है भारतीय कुटुंब व्यवस्था का अर्थ।'

'वही तो, पर मेरे पास ना तो दादा-दादी हैं और ना ही नाना-नानी। किसी ओर रिश्ते की तो मैं क्या ही कहूँ। यही सोचकर दिनभर से मेरा मन खराब है।''

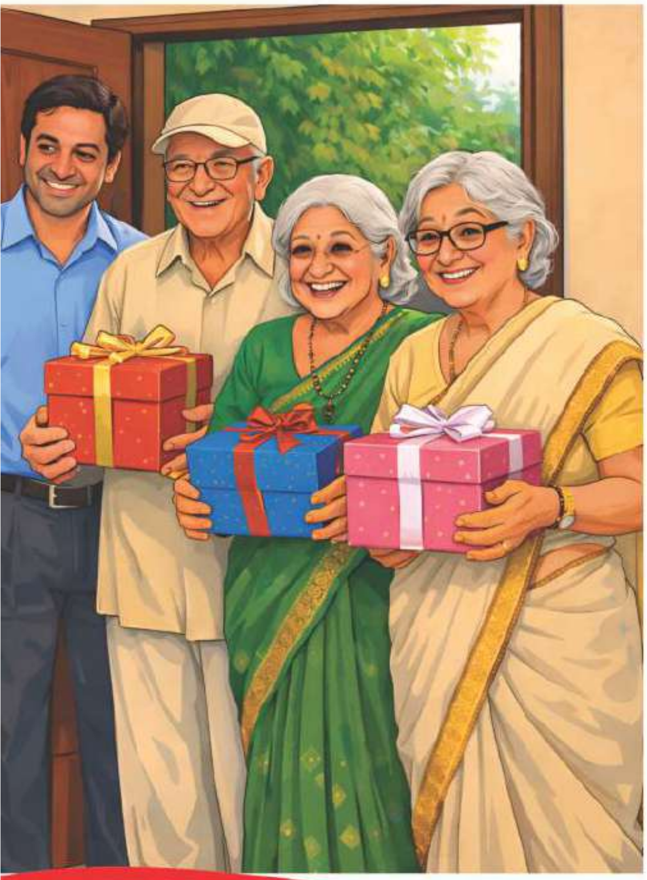

''समस्या तो गम्भीर है पर क्या करें बेटा! ना तो आपके पिताजी का और ना ही मेरा इस दुनिया में कोई है।

''वही तो, इसलिए मैंने सोचा है कि जिस रिश्तों को मैं जानता-पहचानता ही नहीं, उस पर कहानी क्या लिखूँ? एक महीने में प्रतियोगिता है। मैं कहानी प्रतियोगिता वाले दिन शाला ही नहीं जाऊँगा।''

''ऐसा नहीं कहते बेटा! शाम को पिताजी से बात करती हूँ। कोई ना कोई उपाय मिल ही जाएगा।'' शाम को दीपू की माँ ने उसके पिताजी को सारी बात बताई।

''बात तो चिंताजनक है। कुछ सोचते हैं कि क्या हो सकता है।''

घर में सब सामान्य हो चुका था। दीपू भी रोज की तरह रहने लगा था पर दीपू के पिताजी बैचेन थे। उनको लग रहा था कि हमें दीपू के बाल मन को समझना होगा। ऐसी स्थिति का सामना उसे आगे जाकर भी करना पड़ सकता है। हम अनाथ हैं उसका हानि दीपू क्यों भुगते। कुछ तो करना पड़ेगा।

''सुनो! कल दीपू का जन्मदिन है। उसके लिए जो उपहार हमने सोचा था वो तैयार है न?'' दीपू की माँ ने उसके पिताजी से पूछा।

''हाँ! तैयार है।''

''ठीक है, मैंने भी उसके सभी मित्रों को पार्टी के लिए घर आने का बोल दिया है।''

शाम के साथ बज चुके थे। दीपू के सारे मित्र भी आ चुके थे। उत्सव मनाने के लिए उसके पिताजी की प्रतीक्षा हो रही है।

''जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाएँ, बेटा!''

''पिताजी! आप आ गए.. मेरा पुरस्कार कहाँ है?''

''लाया हूँ भाई! पहले आँखें तो बंद करो।''

''लीजिए कर लीं।''

कुछ देर बाद दीपू के पिताजी ने उसे आँखें खोलने को कहा। तो उसके सामने कुछ लोग हाथ में उपहार लिए खड़े थे।

दीपू को कुछ समझ नहीं आ रहा था कि ये सभी कौन हैं।

''पिताजी! ये अंकल-आंटी कौन हैं।''

''दीपू! ये अंकल-आंटी नहीं हैं। ये तुम्हारे दादा-दादी और नाना-नानी हैं।''

''पर पिताजी आप और माँ के तो....।''

''हाँ बेटा! उस दिन जब तुमने भारतीय कुटुंब व्यवस्था की बात कही तो हमने सोचा जिन रिश्तों को हम जी नहीं पाए उनसे आपको क्यों वंचित रखें। इसलिए मैं और आपकी माँ वृद्धाश्रम गए और वहाँ से आपके लिए दादा-दादी, नाना-नानी ले आए।''

''सच पिताजी!''

''हाँ बेटा! आपको दादा-दादी, नाना-नानी मिल गए और इन्हें इनके बच्चे।''

दीपू ने उन सभी के पैर छुए और उनके गले लग गया।

''पिताजी! धन्यवाद। अब मैं 'भारतीय कुटुंब व्यवस्था' विषय पर कहानी भी लिखूँगा और प्रथम भी आऊँगा।''

''दीपू कहानी लिखो पर प्रतियोगिता के लिए नहीं अपनी खुशी के लिए।''

''जी पिताजी!'' कुछ दिन बीते।

''दादा-दादी, नाना-नानी, पिताजी-माँ सुनो, सुनो, सुनो। दीपू आवाज लगाते हुए आया।

''अरे! क्या हुआ दीपू, इतना हल्ला क्यों मचा रहे हो?'' सभी एक साथ बोल पड़े।

''मैं कहानी प्रतियोगिता में प्रथम आया हूँ।''

सब बहुत खुश हुए और उसे बधाई भी दी पर दीपू के पिताजी सोच में पड़ गए कि दीपू कुछ ही दिन तो इनके साथ रहा है। तो उसने ऐसा क्या लिख दिया कि वो प्रथम आ गया।

''पिताजी! क्या सोच रहे हैं। आपको और माँ को कल प्राचार्य जी ने बुलाया है।''

''ठीक है बेटा! हम अवश्य जाएँगे आपके शाला।''

''नमस्ते श्रीमान! हम दीपू के माँ-पिताजी हैं।''

''जी आइये, आपको बेटा प्रथम आया तो हमने सोचा आपसे मिलें।''

''आचार्य जी! वही तो मुझे समझ नहीं आ रहा कि क्या वाकई में दीपू ने इतना अच्छा लिखा कि वो प्रथम आ गया।''

''जी, दरअसल उसने वो लिखा जो आपने 'भारतीय कुटुंब व्यवस्था' विषय पर कहानी लिखने के लिए किया।''

''मतलब!''

''मतलब, आपने नेक काम किया। आपने दो बुजुर्ग दंपत्ति को जिन्हें उनके अपनो ने ही बोझ समझकर वृद्धाश्रम में छोड़ दिया था। आप उन्हें अपने माता-पिता बनाकर अपने घर लेकर आए। ऐसा करके आपने अपने बेटे में भी अच्छे संस्कार स्थापित किए। आपने एक आदर्श रखा है। जिससे और लोगों को भी सीखना चाहिए। आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।''

''धन्यवाद कैसा आचार्य जी! यदि आपके शाला ने ये कहानी प्रतियोगिता नहीं रखी होती तो हम भी कहाँ ऐसा कर पाते।''

''कुछ भी हो, पर हमें विश्वास है कि दीपू सही अर्थ में भारतीय कुटुंब व्यवस्था को समझ गया है। यह कहानी सुनाने के लिए हमने बाकी बच्चों के माता-पिता को भी शनिवार को होने वाली बाल सभा में बुलाया है। आप भी अवश्य आइयेगा।

''धन्यवाद आचार्य जी! हम अपने माता-पिता के साथ अवश्य आएँगे।''

- भोपाल (म. प्र.)

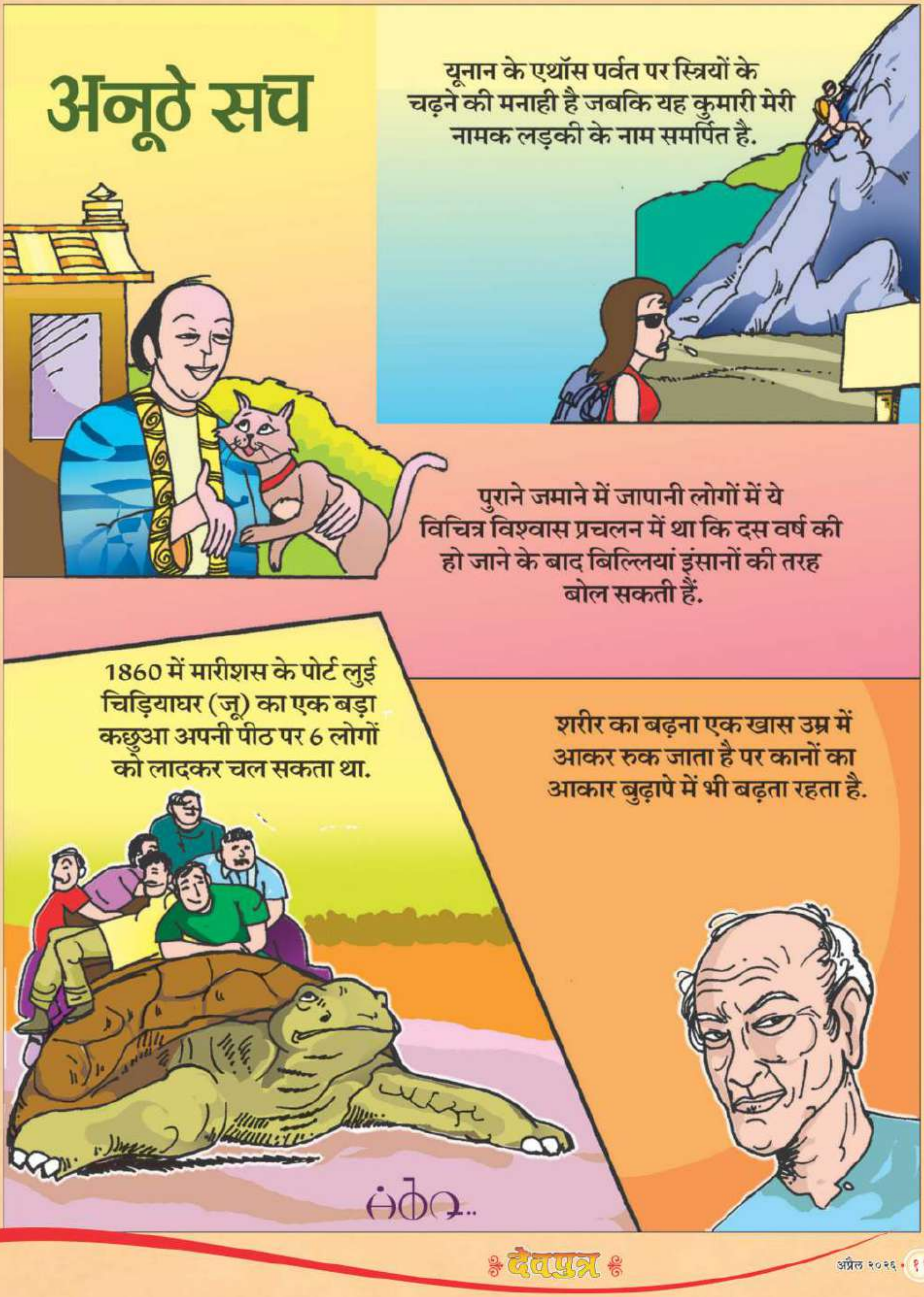
अनूठे सच
यूनान के एथॉस पर्वत पर स्त्रियों के चढ़ने की मनाही है जबकि यह कुमारी मेरी नामक लड़की के नाम समर्पित है.
पुराने जमाने में जापानी लोगों में ये विचित्र विश्वास प्रचलन में था कि दस वर्ष की हो जाने के बाद बिल्लियां इंसानों की तरह बोल सकती हैं.
1860 में मारीशस के पोर्ट लुई चिड़ियाघर (ज़ू) का एक बड़ा कछुआ अपनी पीठ पर 6 लोगों को लादकर चल सकता था.
शरीर का बढ़ना एक खास उम्र में आकर रुक जाता है पर कानों का आकार बुढ़ापे में भी बढ़ता रहता है.

बाल साहित्य में नवचेतना के संवाहक : डॉ. शोभनाथ लाल

प्रस्तोता – डॉ. नागेश पांडेय 'संजय'

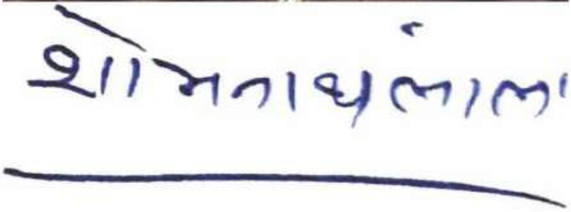

डॉ. शोभनाथ 'लाल' स्वातंत्र्योत्तर बाल साहित्य के प्रतिनिधि लेखक थे। उन्होंने बालकों की हर अवस्था के लिए अनुकूल बाल साहित्य की रचना की। नौनिहालों को नीति और संस्कारों की घुट्टी पिलाई। बालकों का प्रचुर मनोरंजन किया और किशोरों को वैज्ञानिक चेतना प्रदान की।

बाल साहित्य की विभिन्न विधाओं में उनका उत्तम लेखन बाल साहित्य की धरोहर है।

डॉ. शोभनाथ लाल का जन्म उत्तर प्रदेश के गाजीपुर जिले के पदुमपुर गाँव में ७ फरवरी १९३६ ई. को हुआ। पिता अक्षयवर लाल और माता–सुमित्रा देवी ने उनके बालमन में शैक्षिक संस्कारों का ऐसा बीजारोपण किया कि वे आजीवन शिक्षा जगत के देदीप्यमान नक्षत्र के रूप में दूसरों के लिए प्रेरणास्रोत बने रहे। उन्होंने एम. ए. (अँग्रेजी, हिन्दी, राजनीति शास्त्र), बी.एड. और पी–एचडी. की उच्च शिक्षा प्राप्त की। बलिया के राजकीय पालीटेक्निक में व्याख्याता के रूप में सेवारत रहे।

स्वतंत्रता के पश्चात १९६० ई. से उनका लेखन प्रारंभ हुआ जो अनवरत चलता रहा। पत्र–पत्रिकाओं में उनके शिशुगीत बालगीत, बालकथा और आलेख नियमित रूप से प्रकाशित होते रहे। उन्होंने समय–समय पर बाल साहित्य की पड़ताल करते हुए समीक्षात्मक निबंध भी लिखे। उनका बाल उपन्यास 'सीपियांडेला की सैर' अपने समय में बहुत चर्चित हुआ। इस पर उन्हें तत्कालीन सुप्रतिष्ठित रतन शर्मा बाल साहित्य पुरस्कार भी मिला था।

उनकी उल्लेखनीय पुस्तकें हैं–

शिशु काव्य– ता–ता थैया (१९८३), अंटी बंटी पप्पू पंप (१९९०), बंटी लौट आया (शिशु गीत) (१९९३), अक्कड़–बक्कड़ लाल बुझक्कड़ (१९९३), शिशु सरस गीत/तीन भाग (१९९८)।

बाल काव्य– गुलाब और चम्पा (१९८४), हँसते फूल महकते फूल (१९८५), बालगीत भारती (१९८८), चलो खेलने चाँद पर (१९८९), माँ मैं दिल्ली जाऊँगा (१९९०), जंगल में जब हुआ चुनाव (१९९०), धरती के बालगीत (१९९३), हमारा देश (१९९३)।

बाल कहानी संग्रह– प्रेरक कथाएँ (१९८६), उज्ज्वल कथाएँ (१९८७), न्याय का पक्ष (१९९०), बाज बहेलिया और कबूतर (१९९०), बंटी लौट आया (१९९२), और कबूतर उड़ गया (१९९६), धवरी की वापसी (१९९६)। वैज्ञानिक उपन्यास – सीपियाण्डेला की सैर (१९९३)।

संपादित बाल कहानी संग्रह – कौए की

देशभक्ति, अपने पराये, एक पिकनिक ऐसी भी, गुब्बारे वाला, चौबीस बाल कहानियाँ (सभी १९९१)।

अन्य – जहाँ–जहाँ पग धरे राम ने (१९९६), अनमोल बातें (१९९९), देश–देश की लोक कथाएँ (२०००), हमारे प्रमुख तीर्थ स्थल (२०००)।

प्रख्यात बाल साहित्यकार रामसिंहासन सहाय 'मधुर' उनके साहित्यिक गुरु थे। डॉ. लाल ने १९८६ में बलिया में नागरी बाल साहित्य संस्थान की स्थापना की। इस संस्थान के माध्यम से वे मधुर जी की स्मृति में प्रतिवर्ष बाल साहित्य पुरस्कार भी प्रदान करते थे, जो अब बंद है। लाल जी ने रामसिंहासन सहाय 'मधुर' अभिनंदन ग्रंथ का संपादन भी किया था। उनका बाल साहित्य बच्चों के चारित्रिक संवर्धन की दृष्टि से लिखा गया है। वे बच्चों में उत्तम संस्कारों और वैज्ञानिक दृष्टि के पक्षधर थे। अपने सृजन के माध्यम से उन्होंने बच्चों को भारतीय संस्कृति के महनीय स्वरूप से परिचित कराया।

२२ जनवरी २००५ को वे वाराणसी में उनका देहांत हो गया। उनकी रचनाएँ, प्रतिनिधि बाल साहित्य की पहचान हैं। आइए, उनकी कुछ विशिष्ट रचनाएँ पढ़ते हैं–

सरपट घोड़ा

अब्बक–डब्बक काठी–कोड़ा,
आसमान से उतरा घोड़ा।
रंग चमकता उसका नीला,
साज–बाज सुन्दर भड़कीला।
घोड़ा था भूखा भरपूर,
फेंक दिए चखकर अँगूर
घोड़ा सरपट दौड़ लगाए,
कोई उसको पकड़ न पाए।

मत पूछो

कुकड़ करती मुर्गी आई,
चांदी का एक अंडा ब्याई।
छेद से निकला चूजा प्यारा,
फुदक-फुदक कर चुगता चारा।
मत पूछो फिर उसका हाल,
लगा माँगने चावल-दाल।

मेरा गुड्डा

मेरा गुड्डा बड़ा सयाना,
नहीं कभी कुछ खाता खाना।
काम मटक कर आँख दिखाना,
या फिर नाच-नाच कर खाना।
माँ जब से गुड़िया लाई,
इसकी थाह न मिलती भाई।
एक बात की जिद है खाई,
कर दो मेरी अभी सगाई।

रिंकू भाई

क्यों रोते हो रिंकू भाई,
मिली नहीं क्या तुम्हें मिठाई?
करते होगे बहुत ढिठाई,
अम्मा होंगी डाँट पिलाई।
क्यों हो ऐसे मुँह लटकाए,
तेरा रोना समझ न आए।
करते होंगे नहीं पढ़ाई,
कहीं हुई तो नहीं पिटाई?

– शाहजहाँपुर (उ. प्र.)

बूझो तो जाने

– श्याम सुन्दर तिवाड़ी

(१) गर्मी में चलती रहती हूँ।
सर्दी में रूक जाती।
मुझसे हर जन पीड़ित रहते,
तन को नहीं सुहाती।

(२) नीड़ नहीं वह कभी बनाती,
बागो की रानी कहलाती।
काला रंग है उसका भैया,
फिर भी सबको बहुत सुहाती।

(३) पाँच अक्षर का मेरा नाम,
उलटा-सीधा एक समान।

(४) प्रथम कटे तो बंदूक बने,
अन्त कटे तो थैला।
आता वह सब्जी के काम,
नाम बताओ छैला।

(५) नहीं कभी श्रम से घबराती,
सदा सतत चलती ही जाती।
उससे भी सब शिक्षा पाते,
सामाजिक प्राणी कहलाती।

– भीलवाड़ा
(राजस्थान)

उत्तर- १) लू। २) कोयल। ३) नवजीवन। ४) बैंगन। ५) चींटी।

करतल योग

– संदीप पांडे 'शिष्य'

बब्बन के दादाजी पिछले एक माह से बीमार है। वह बिस्तर पर पड़े हैं। घर पर बब्बन के सबसे अच्छे मित्र, दादाजी उसको खेलने और पढ़ाई में सहायता नहीं कर पा रहे हैं। उसके पिताजी ने बताया है कि उनके दिमाग में क्लाट आ गया है और ठीक होने में समय लगेगा। शाला से आकर वो रोज दादाजी को अपने दिनभर की गतिविधियों का ब्यौरा सुना आता और दादाजी का मन कुछ देर के प्रसन्न हो जाता। फिर भी दिनभर सक्रिय रहने के आदी, दादाजी के लिए बिस्तर पर पड़े रहना भारी सजा थी।

एक दिन बब्बन ने शाला से आकर प्रसन्न होकर बताया कि उसे मोनो एक्टिंग में दूसरा स्थान मिला है। दादाजी ने उसकी पीठ थपथपाई और अपनी मोनो एक्टिंग दिखाने को कहा। बिना शाला यूनीफॉर्म उतारे बब्बन ने अपनी एक्टिंग से दादा का दिल जीत लिया। उन्होंने कई बार ताली बजा कर अपनी खुशी जाहिर की। दादाजी के पुन: उस एक्ट करने के आग्रह पर बब्बन भी पूरी ऊर्जा सहित दोहरा गया। लगभग आधा घंटा बीत गया और दादाजी इस बीच अधलेटे ताली बजाते रहे।

बब्बन के माता–पिता इस दृश्य को दूसरे से देख समझ रहे थे। उसके पिता ने जब बब्बन को खाना खाते रोज दो तीन बार ऐसा ही कुछ दादाजी के सामने करने को कहा तो वो सहर्ष तैयार हो गया।

अब सुबह दिन शाम, निमय से बब्बन अपने दादाजी के सामने कोई कहानी, कविता, चुटकुले, गाने आदि सुना उनको खुश हो ताली बजवाने पर मजबूर कर देता। एक सप्ताह के भीतर ही दादाजी लाठी के सहारे चलने लग गए थे। बब्बन के पिता समझ गए थे कि ताली और मन की प्रफुल्लता दवाई –सा असर कर रही है। अब तो वो भी नियम से उनके साथ बैठ भजन लगा देते और स्वयं भी उनके साथ जोर से ताली बजाते। दो सप्ताह में ही दादाजी बिना लाठी के चल रहे थे और बब्बन को गृहकार्य कराने में सहायता करने लग गए थे। रोज पंद्रह गोलिया खाने की मजबूरी से अब दादाजी को पूरी तरह मुक्ति मिल गई थी।

– अजमेर (राजस्थान)

कंठ और करताल

देह बसे दो वाद्य है
कंठ और करताल।
रोग हरे, आनंद करे,
रस बरसें तत्काल।।

बाबासाहेब डाकटिकिटों पर

– उमेशकुमार नीमा

भारत रत्न **डॉ. बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर** एक महान विचारक कानूनविद्, राजनेता, शिक्षाशास्त्री एवं समाज सुधारक थे। एक साधारण परिवार में जन्म लेकर वे अपने परिश्रम से स्वतंत्र भारत के संविधान के निर्माता एवं प्रथम कानून मंत्री बने। डॉ. अम्बेडकर का जन्म १४ अप्रैल १८९१ को मध्यप्रदेश के इन्दौर शहर से सम्बद्ध महू तहसील में हुआ। इनके पिता महू में सूबेदार थे तथा सैनिक स्कूल में अध्यापक रहे। पिता के सेवानिवृत्त होने के पश्चात परिवार महाराष्ट्र के सातारा जिले में रहने लगा। भीमराव ६ वर्ष की आयु से ही मातृ वात्सल्य से वंचित हो गए थे। डॉ. अम्बेडकर की शिक्षा महू, मुंबई व बड़ौदा में हुई तब सयाजीराव गायकवाड की छात्रवृत्ति से अमेरिका से एम. ए. तथा पी–एचडी की शिक्षा एवं उपाधि प्राप्त की।

आप अमेरिका से लौटने के पश्चात बड़ौदा राज्य के सैन्य सचिव तथा तत्पश्चात् राज्य के वित्त मंत्री बनाए गए। डॉ. अम्बेडकर विपुल प्रतिभा के विद्यार्थी थे। व्यवसायिक जीवन में वे अर्थशास्त्र के अध्यापक रहे तथा कुछ समय कोर्ट में वकालत भी की। बाद का उनका जीवन राजनीतिक गतिविधियों में बीता भारतीय संविधान के मसौदा निर्माण समिति के अध्यक्ष के रूप में उन्होंने संविधान निर्माण में अनूठी भूमिका का निर्वाह कर देश को लोकतंत्र की संविधान रूपी आधार शिला भेंट की जिस पर संपूर्ण देश का लोकतंत्र पिछले ७५ वर्षों से चल रहा है तथा देश गर्व करता है। आज भी पूरा देश १४ अप्रैल को समता दिवस व ज्ञान दिवस के रूप में मनाता है। डॉ. अम्बेडकर को विश्वभर में उनका मानवाधिकार आंदोलन संविधान निर्माता और उनकी प्रकाण्ड विद्वता के लिए जाना जाता है। उनका महापरिनिर्वाण दिल्ली में ६ दिसम्बर १९५६ को हुआ।

डॉ. अम्बेडकर के जन्मदिवस पर हर वर्ष करोड़ों अनुयायी उनके जन्मस्थल महू में विश्वभर से आते हैं तथा उनको स्मरण करते हैं। भारत के संसद परिसर में डॉ. अम्बेडकर की मूर्ति प्रतिष्ठित की गई है। यहाँ भी प्रत्येक वर्ष १४ अप्रैल को श्रद्धा सुमन अर्पित किए जाते हैं। १९९० में उन्हें मरणोपरांत भारत रत्न से सम्मानित किया गया यानी कि मृत्यु के ३४ वर्ष पश्चात् उन्हें यह सम्मान दिया गया।

अब डॉ. भीमराव अम्बेडकर पर भारत सरकार द्वारा जारी डाक टिकटों की चर्चा करते हैं–

डाक विभाग को सर्वप्रथम स्मरण आया डाक टिकट जारी करने का १९६६ में, उनके ७५ वे जन्म दिवस १४ अप्रैल १९६६ को (१८९१–१९५६) पर। इस वर्ष १५ पैसे का डाक टिकट जारी किया गया, संविधान निर्माता के रूप में देश में पहली बार डाक टिकट पर सम्मान दिया गया। १४ अप्रैल १९७३ को पुन: ८२ वीं जन्मतिथि पर १० पैसे का डाक टिकट जारी किया गया। यह बाबा साहब पर दूसरा डाक टिकट था तथा यह उल्लेखनीय है कि अब तक उन्हें

'भारत रत्न' नहीं प्रदान किया था। १९९० में डॉ. अम्बेडकर को अवसान के ३४ वर्ष बाद स्मरण करते हुए भारत रत्न प्रदान किया। इस कारण अगले वर्ष १४ अप्रैल १९९१ को एक रुपये का सुन्दर डाक टिकट जारी किया गया। इस डाक टिकट पर उनके चित्र के साथ 'महार मार्च' की ऐतिहासिक घटना की ......, उनके समर्थकों की विशाल संख्या को भी चित्रित किया गया।

नई शताब्दी में संविधान निर्माता को संपूर्ण देश प्रत्येक वर्ष गणतंत्र दिवस एवं संविधान दिवस पर स्मरण करता है। इस याद को और अधिक लोकप्रिय बनाने हेतु डॉ. अम्बेडकर स्मारक डाक टिकट को प्रतिदिन देश के पोस्ट ऑफिस में उपयोग किए जाने वाले नियत डाक टिकट शृंखला (Definative Series) में स्थान दिया गया।

८वीं नियत शृंखला का प्रारंभ वर्ष २००० में हुआ तथा डॉ. अम्बेडकर पर तीन रुपये का डाक टिकट दैनिक उपयोग हेतु जारी किया गया। यह डाक टिकट शृंखला ३१ अक्टूबर २००० में अगले १० वर्षों के लिए प्रारंभ की गई।

१०वीं नियत शृंखला के तहत पुन: डॉ. भीमराव अम्बेडकर पर २ रुपये का डाक टिकट वर्ष २००८-०९ में जारी किया गया। २०१५ में ११वीं नियत शृंखला में देश के २४ महान देशभक्तों को स्थान दिया गया। इस शृंखला में लगातार तीसरी बार डॉ. अम्बेडकर पर ५ रुपये का डाक टिकट जारी कर सम्मान दिया गया। इस प्रकार डॉ. अम्बेडकर अवसान के ५० वर्ष बाद लगातार लोकप्रिय होते गए तथा उन पर डाक टिकटों की जारी करने की संख्या स्वत: बढ़ती गई। ३० सितम्बर २०१७ को संसद भवन के चित्र के साथ डॉ. अम्बेडकर का टिकट ७वीं बार जारी किया गया।

डॉ. बाबा साहब अम्बेडकर ने १४ अक्टूबर १९५६ को लगभग ४ लाख अनुयायी के साथ बौद्ध

धर्म को स्वीकार किया गया था। यह स्थान दीक्षा भूमि बौद्ध धर्म के सबसे प्रतिष्ठित स्मारकों में से एक है तथा इसी स्थान पर बाबा साहब ने दीक्षा प्राप्त की थी। नागपुर में २२ एकड़ के विशाल भूमि पर स्थापित दीक्षा भूमि स्तूप भारत के सभी बौद्ध स्तूपों में से सबसे विशाल आकार का है। भूतल में इसकी ऊँचाई ३० मीटर है। दीक्षा भूमि को भारत में बौद्ध धर्म के तीर्थ स्थान का दर्जा प्राप्त है। अशोक विजयदशमी के दिन लाखों तीर्थयात्री इस स्थान पर पहुँचते हैं। भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति श्री के. आर. नारायण ने दीक्षा भूमि का उद्घाटन किया था। डाक विभाग ने १४ अप्रैल २०१७ को इस स्थान पर ५ रुपये का सुंदर डाक टिकट जारी किया। एक डाक टिकट पर बाबा साहब के चित्र के साथ भगवान बुद्ध दिखाई दे रहे हैं, वहीं दूसरे डाक टिकट में दीक्षा भूमि का सुन्दर चित्र दिया गया है।

मध्यप्रदेश की महू नगरी सचमुच गौरवान्वित है कि, इस छोटी सी जगह को विशाल देश के संविधान निर्माता ने जन्म स्थली के रूप में चुना। भारतीय डाक विभाग भी बहुत गर्व अनुभव करता है कि १९६६ से लेकर अब तक ७ डाक टिकटों को जारी किया जा चुका है।

मध्यप्रदेश इस महान विभूति को नमन करता है।

– इन्दौर (म. प्र.)

एक सवाल

कच्ची मिर्च या टमाटर हरे होते हैं, लेकिन पकने के बाद लाल क्यों हो जाते हैं?

मिर्च और टमाटर दोनों ऐसी सब्जियाँ हैं जिन्हें लोग हरे तथा लाल दोनों रूपों में पसन्द करते हैं। कच्ची अवस्था में ये हरे होते हैं और जब पक जाते हैं तो इनका रंग बिल्कुल लाल हो जाता है। यह परिवर्तन इनमें कैसे हो जाता है ? दरअसल मिर्च या टमाटर में 'क्लोरोफिल' तथा 'लाइकोपिन' नामक तत्व विद्यमान रहते हैं।

'क्लोरोफिल' इन्हें हरा तथा 'लाइकोपिन' लाल रंग प्रदान करता है। लेकिन कच्ची मिर्च या टमाटर में क्लोरोफिल प्रचुर मात्रा (300 मिलिग्राम/10 ग्राम) में पाया जाता है। जबकि लाइकोपिन की मात्रा उस समय काफी कम (0.11 मिलिग्राम/10 ग्राम) पायी जाती है। कच्ची मिर्च या टमाटर में 'क्लोरोफिल' की मात्रा अधिक होने के कारण ये हरे दिखाई देते हैं। लेकिन जैसे-जैसे ये पकते जाते हैं वैसे-वैसे इनमें 'क्लोरोफिल' की मात्रा कम होती जाती है तथा 'लाइकोपिन' की मात्रा बढ़ती जाती है। जब ये पूर्णतः पक जाते हैं तो इनमें क्लोरोफिल की मात्रा नहीं के बराबर रह जाती है और लाइकोपिन की मात्रा (7.85 मिलिग्राम/100 ग्राम) अत्यधिक बढ़ जाती है। यही कारण है कि कच्ची अवस्था में मिर्च या टमाटर हरे होते हैं, लेकिन पकने के बाद वे लाल हो जाते हैं।

© Sanket

पर्वतारोहण प्रशिक्षण केंद्र

– डॉ. रवीन्द्र कान्हेरे

भारत एक विशाल देश है जहाँ हिमालय जैसी ऊँची पर्वतमालाएँ हैं। इन पर्वतों पर चढ़ाई करना न केवल रोमांचक कार्य है, बल्कि यह शारीरिक व मानसिक दृढ़ता का भी परिचायक है। पर्वतारोहण एक साहसिक खेल (Adventure Sport) है, जिसके लिए विशेष प्रकार के प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। इस उद्देश्य से भारत में विभिन्न पर्वतारोहण प्रशिक्षण केंद्रों की स्थापना की गई है।

भारत का सबसे प्रमुख केंद्र है– हिमालयन माउंटेनियरिंग इंस्टिट्यूट (Himalayan Mountaineering Institute-HMI), जो **दार्जिलिंग (पश्चिम बंगाल)** में स्थित है। इसकी स्थापना वर्ष १९५४ में भारत के पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू और प्रसिद्ध पर्वतारोही **तेनजिंग नोर्गे** के सहयोग से की गई थी। तेनजिंग नोर्गे १९५३ में एडमंड हिलेरी के साथ विश्व की सबसे ऊँची चोटी माउंट एवरेस्ट पर विजय प्राप्त की थी। इसी ऐतिहासिक उपलब्धि के बाद भारत में पर्वतारोहण के प्रति रूचि बढ़ी और इस संस्थान की नींव रखी गई।

इस केन्द्र का मुख्य उद्देश्य युवाओं में साहस, आत्मविश्वास, अनुशासन, नेतृत्व क्षमता और देशभक्ति की भावना का विकास करना है। यहाँ विद्यार्थियों, सैनिकों और नागरिकों को पर्वतारोहण की तकनीकि, शारीरिक और मानसिक तैयारी करवाई जाती है।

केन्द्र में छात्रों को चढ़ाई के लिए आवश्यक उपकरणों का प्रयोग सिखाया जाता है, जैसे– रस्सी, हुक, करबीनर, आइस एक्स, जूते आदि। प्रशिक्षण के दौरान छात्रों को रॉक क्लाइम्बिंग (चट्टान चढ़ाई), आइस क्लाइम्बिंग (बर्फ पर चढ़ाई), ग्लेशियर पर चलना, कैम्प लगाना और आपातकालीन परिस्थितियों में बचाव के उपाय भी सिखाए जाते हैं।

इसके अतिरिक्त भारत में नेहरू इंस्टीट्यूट ऑफ माउंटेनियरिंग (उत्तर काशी), जवाहरलाल नेहरू इंस्टीट्यूट ऑफ माउंटेनियरिंग (पहलगाम) और इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ स्कीइंग एंड माउंटेनियरिंग (गुलमर्ग) जैसे अन्य संस्थान भी पर्वतारोहण प्रशिक्षण प्रदान करते हैं।

इन संस्थानों में प्रशिक्षण प्राप्त कर व्यक्ति न केवल पर्वतारोहण में निपुण बनते हैं, बल्कि कठिन परिस्थितियों में जीवन जीने की कला भी सीखते हैं। ऐसे प्रशिक्षित व्यक्ति प्राकृतिक आपदाओं, जैसे भूकंप या हिमस्खलन, के समय राहत और बचाव कार्यों में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

इस प्रकार, पर्वतारोहण प्रशिक्षण केंद्र हमारे देश के युवाओं को निडर, अनुशासित और साहसी नागरिक बनाने में अत्यंत उपयोगी हैं। यह संस्थान न केवल खेलकूद की भावना को प्रोत्साहित करते हैं, बल्कि राष्ट्र के लिए सेवाभाव और समर्पण की भावना भी विकसित करते हैं।

– भोपाल (म. प्र.)

घमण्डी मंकू को शिक्षा

– रेखा शाह आरबी

सुन्दर वन का दक्षिणी छोर बहुत ही सुंदर था, चारों ओर हरियाली, फूल अनगिनत पेड़–पौधों से घिरा हुआ था और एक बहुत ही बड़ा जलाशय जो सबकी प्यास बुझाने के काम आता था।

वहीं पर आम और जामुन के दो पेड़ भी थे। आम का पेड़ बेहद ही घना छायादार था, जिस पर मंकू के माँ–पिताजी और उसके दोनों भाई जिमी और टिमी भी साथ रहते थे जिमी तीनों भाइयों में सबसे समझदार था।

वह कोई भी शरारत नहीं करता था और हमेशा अपने पढ़ाई पर ध्यान देता रहता था और पेड़ पर रहने वाले सभी जीव–जंतुओं के साथ मिलजुल कर रहता था।

लेकिन मंकू इसके एकदम उलट था, उसको तो खाली शरारत करने में ही आनंद आता था, कभी वह चीटियों के घोंसले उजाड़ता तो कभी आम खाने के लिए आए तोते तो दौड़ा लेता।

जिमी और टिमी हमेशा समझाते की प्रकृति द्वारा पैदा किए फल–फूल पर सभी का बराबर हिस्सा होता है, लेकिन मंकू को तो वह कुछ भी समझ में ही नहीं आता था, उसको लगता था कि यह पेड़ केवल उसी के परिवार के लोगों के लिए है, इसीलिए किसी को उस पेड़ पर टिकने नहीं देता था।

बगल के जामुन के पेड़ पर हम्पी तोता का घर था, वह कहता– ''अभी तुम लोगों के पेड़ पर फल आया है तो मुझे खाने दो, जब मेरे फल पर पेड़ आएगा...... तो मैं भी तुम लोगों की खिलाऊँगा।''

जिमी और टिमी को तो इस भाईचारे में पूरी तरह विश्वास और वह हम्पी के बात से सहमत भी थे।

लेकिन मंकू जरा भी इस बात को समझने के लिए तैयार नहीं था, वह तो जब भी हम्पी आम खाने के लिए आता तो उसे दौड़ा लेता, बेचारा जान बचाकर उल्टे पैर भाग लेता था।

जिमी और टिमी को यह देखकर बहुत ही दु:ख होता, वह कुछ आम तोड़कर छुपाकर हम्पी को दे आते, जिससे कि वह भी आम का स्वाद ले सके, हम्पी को आम बहुत पसंद थे।

लेकिन यह सब कुछ मंकू से छुपा कर होता, क्योंकि जान जाने पर वह झगड़ा करने पर उतारू हो जाता था।

लेकिन हम्पी को तो बहुत सारा आम खाने का मन करता, जब वह बगल के पेड़ पर पीले–पीले पके हुए आमों की सुगंध उसके नथुनों में पड़ती तो वह खाने के लिए लालायित हो जाता था और मजबूर होकर मंकू के आम के पेड़ पर आम खाने के लिए चला आता था।

लेकिन छुपाते–छुपाते हुए या मंकू कहीं गया होता तब ही हम्पी आम खाने के लिए आता था।

एक दिन ऐसे ही हम्पी आम खाने के लिए आया हुआ था, तो अचानक मंकू जंगल से घूम कर आ गया और हम्पी को आम खाता हुआ देखकर मंकू ने उसे दौड़ा लिया और बोला– ''हम्पी के बच्चे! तू अपनी आदत से बाज नहीं आएगा तू किसकी अनुमति से मेरे पेड़ पर आम खाने आया है ?''

हम्पी अभी पंख फड़फड़ा कर उड़ान भरने की कोशिश कर रहा था.... तब तक मंकू ने उसे दौड़कर पकड़ लिया, यह तो भला हो कि जिमी और टिमी उस समय आसपास ही थे और उन्होंने तुरंत हम्पी की जान बचाई।

वरना तो मंकू उसे आज अवश्य कुछ ना कुछ नुकसान पहुँचा देता। लेकिन हम्पी ने भी जाते–जाते मंकू को धमकी दे दी कि– ''मैं तुझे देख लूँगा आइंदा से कभी मेरे पेड़ के आसपास दिखना भी मत... .वरना मुझसे बुरा कोई नहीं होगा।''

मंकू– ''तू ही लालची है.... आम खाने के लिए मेरे पेड़ पर बार–बार चला आता है... मैं कभी तेरे पेड़ पर नहीं जाता हूँ।''

आखिरकार दोनों में खूब दुश्मनी हो गई, एक–दूसरे को देखते तो मुँह फेर लेते थे, लेकिन वहीं पर हम्पी जिमी और टिमी को बहुत प्यार करता था।

धीरे–धीरे आम का सीजन बीत गया और जामुन की ऋतु आया, पूरा पेड़ जामुन के कच्चे–पक्के फलों से लद गया, दूर–दूर से पशु–पक्षी आकर जामुन का आनंद उड़ाने लगे और हम्पी उनके साथ मजे ले लेकर खाता था।

जिमी और टिमी भी खूब आनंद ले–लेकर जामुन खाते थे, लेकिन मंकू देखकर ललचाने के सिवा कुछ नहीं कर पाता था और हम्पी तोते ने जिमी और टिमी को खुली छूट दे रखी थी, कि जितना मर्जी हो मेरे पेड़ से तुम लोग जामुन खा सकते हो।

पूरे जामुन के मौसम में मंकू को जामुन खाने का मन करता रहा, लेकिन वह तो अपनी पिछली बदमाशियाँ के लिए क्षमा माँगने से रहा, इसलिए उसे एक भी जामुन खाना नसीब नहीं हुआ।

एक रात बहुत ही भयंकर आँधी पानी तूफान आया, आम का पेड़ बहुत ही बड़ा और पुराना था, देखते ही देखते वह धड़ाम से धराशायी हो गया, पेड़ पर रहने वाले सभी जीव–जंतु बेघर हो गए, साथ ही मंकू का पूरा परिवार भी जमीन पर आ गिरा।

हम्पी ने सभी को अपने जामुन के पेड़ पर आश्रय दिया।

आंधी पानी इतना की सभी काँप रहे थे, मंकू के माँ–पिताजी ने हम्पी तोते से प्रार्थना की कि हमें अपने पेड़ पर आसरा दे, ताकि आँधी पानी से जान बच सके।

हम्पी तोते ने सभी को तो शरण दे दिया, लेकिन वह मंकू को शरण देने के लिए तैयार नहीं था, क्योंकि मंकू अपने करतूत के लिए क्षमा भी नहीं माँग रहा था।

मंकू के माँ–पिताजी, जिमी–टिमी ने बहुत ही कहा कि मंकू हम्पी से क्षमा माँग लो, ताकि तुम्हारी भी जान बच सके, वरना इस आंधी और पानी में बचना कठिन है।

उसके माँ–पिताजी, जिमी–टिमी सभी पेड़ के ऊपर चढ़ गए और वहीं से उसको यह बात समझा रहे थे और मंकू पानी में भींग कर काँप रहा था, ठंड के मारे उसकी स्थिति खराब हो रही थी।

जब कोई चारा नहीं देखा तो और अधिक स्थिति खराब होने लगी तो वह हाथ जोड़कर हम्पी के पास गया और बोला– ''मित्र! तुम सही थे... हमें एक–दूसरे के साथ सहयोग करते हुए और भाईचारे के साथ ही रहना चाहिए... मैं गलत था और तुम हमेशा सही थे... मुझे क्षमा कर दो और मुझे अपने पेड़ पर शरण दे दो.. वरना आज जान बचाना कठिन है।''

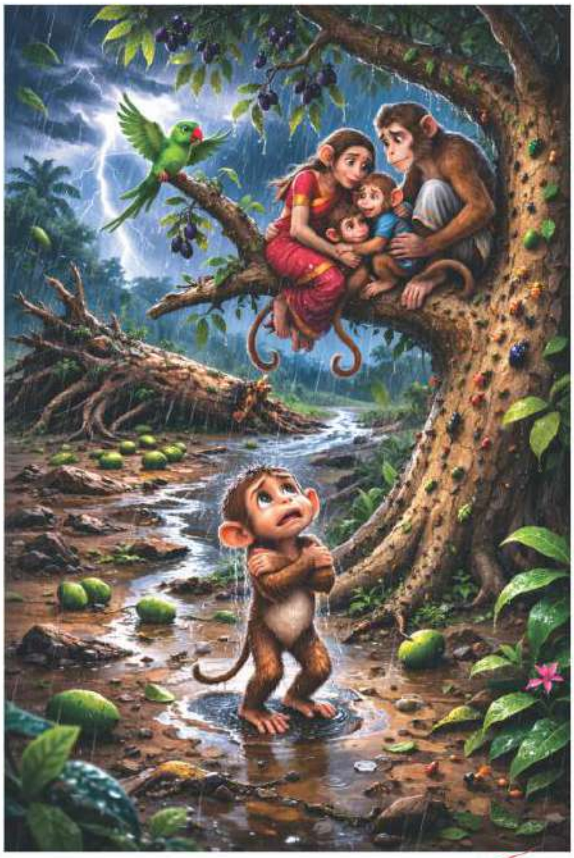

हम्पी का दिल तो वैसे भी बहुत अच्छा था वह तो बस मंकू को सबक सिखाना चाहता था... ना कि उसे नुकसान पहुँचाना चाहता था.. उसने मंकू का हाथ पकड़ कर तुरंत अपने पेड़ के ऊपर ले गया और उसको अपने लिए रखे गए भोजन में से उसे भोजन करवाया... जिससे उसे थोड़ी ठंड में राहत मिल सके।

भोजन पानी करने के बाद मंकू के जान में जान आई, अब तो वह अपने पिछले व्यवहार के लिए और ही अधिक मन ही मन में लज्जित होने लगा और सोचने लगा– यह छोटा–सा जीव तोता इसके अंदर कितनी दया भावना और सबके लिए प्यार उपस्थित है और एक मैं सबके साथ कितना गलत व्यवहार किया करता था।

मंकू ने मन ही मन प्रण किया की आज के बाद वह सब की सहायता करेगा। किसी को परेशान नहीं करेगा। हम्पी के निस्वार्थ सहायता ने उसको पूरी तरह बदल कर रख दिया।

वह तो हमेशा अकेला रहता था, परेशान करने को अपनी खुशी मानता रहा था, लेकिन जब आज उसके दोनों भाई और हंपी और भी सभी जीव जंतु उसके साथ उसके आसपास उसे घेर कर उसका ध्यान रख रहे थे, तब उसे पता चला कि सबके साथ मिलजुल कर रहना कितना आनंददायक होता है।

उस दिन के बाद से वह कभी किसी से झगड़ा नहीं करता था, बल्कि सारे लोगों के साथ बेहद ही प्यार से पेश आता था। सभी मिलजुल कर इस जामुन के पेड़ पर अपना रहने लगे, हँसी–खुशी एक परिवार के जैसे।

मंकू अपने जीवन का सबसे मुख्य सबक सीख चुका था। उसके माँ–पिताजी भी उसमें आए बदलाव से बहुत प्रसन्न थे। और जिमी–टिमी की प्रसन्नता का ठिकाना नहीं था।

– बलिया
(उत्तर प्रदेश)

छः अँगुल मुस्कान

शाला में निरीक्षण के लिए आए डीएम ने मास्टर को मोबाइल चलाते देखा।

उसने पूछा– शाला में मोबाइल चला रहे थे?

मास्टर पहले तो सकपकाया, फिर बोला तो बच्चों में मोबाइल चला कर बता रहा था कि इससे क्या नुकसान होता है।

*****

शिक्षक (छात्र से) अपने देश में लोगों की मृत्युदर क्या है?

एक छात्र–सर यहाँ जो जन्म लेता है वह मरता भी है। अत: मृत्यु दर शतप्रतिशत है।

*****

दो आलसी कंबल ओढ़कर सो रहे थे। तभी एक चोर आया और उनके कंबल खींचकर भाग गया। एक आलसी चिल्लाया–चोर–चोर पकड़ो–पकड़ो।

दूसरा आलसी बोला– रहने दे रहने दे, जब सोने से पहले तकिया लेने आएगा, तब पकड़ लेंगे।

*****

रेल में एक यात्री सामने बैठे बच्चे से पूछा, ''बेटा तुम्हारे पिताजी क्या करते हैं?''

बच्चा–मुर्गा फंसाते हैं।

पास बैठी उसकी माँ यह सुनकर बोली, ''राजू तू क्या कह रहा है, तुम्हारे पिताजी तो.....

''लेकिन माँ! शाम को जब पिताजी घर आते हैं आज एक मुर्गा फँस गया था,'' बच्चे ने कहा।

ये कैसा उपहार!

चित्रकथाः देवांशु वत्स

उतर गया बुखार

– डॉ. राजीव गुप्ता

सोनू गधा को कई दिनों से बुखार आ रहा था।

पहले तो उसके माँ–पिताजी ने इस पर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया। उन्होंने सोचा कि मौसमी बुखार होगा, अपने आप दो–तीन दिनों में ठीक हो जाएगा। पर जब ७–८ दिन बीतने के बाद भी बुखार ठीक नहीं हुआ, बल्कि बढ़ता ही चला गया और सोनू ने कमजोरी के मारे चारपाई पकड़ ली तो उन्हें चिंता हुई।

सोनू के पिताजी मोनू उसे लेकर चंपा वन के काबिल डॉक्टर जेरु जिराफ की क्लिनिक पर गए। उस समय वहाँ मरीजों की भीड़ लगी हुई थी। मोनू के पिताजी ने कंपाउंडर से पर्चा बनवाया और बाहर बैठ कर अपनी बारी आने की प्रतीक्षा करने लगे। उनका नंबर आने में पूरा एक घंटा लग गया।

''कहो क्या हुआ, सोनू बेटा?'' चेम्बर में घुसते ही डॉ. जेरू ने पूछा।

''डॉक्टर साहब, इसे ८ दिन से बुखार आ रहा है। उतर ही नहीं रहा है।'' मोनू ने कहा।

''आठ दिनों से.... लेकिन आप जो आज दिखाने आ रहे हैं?''

''मैंने समझा कि मौसमी बुखार है। एक–दो दिन में ठीक हो जाएगा। इसीलिए मैं स्वयं ही केमिस्ट से लाकर इसे दवाइयाँ देता रहा।'' मोनू ने कुछ झिझकते हुए कहा। ''नहीं, बुखार को कभी मामूली तौर पर नहीं लेना चाहिए। इससे आगे चल कर इसके बिगड़ जाने का खतरा रहता है।'' कहते हुए डॉ. जेरु ने सावधानी पूर्वक सोनू का परीक्षण किया।

''इसे तो टायफायड फीवर है। लापरवाही करने से यह जानलेवा भी हो सकता है।'' उन्होंने पूरे आत्मविश्वास से कहा।

''टायफायड फीवर? यह क्या होता है, डॉक्टर साहब?'' मोनू भौचक्का सा था।

''यह बुखार एक तरह के बैक्टिरिया से होता है, जिसका नाम सैल्मोनैला टाइफोसा है। यह दूषित पानी पीने या उससे धुली फल–सब्जी आदि खाने से हो जाता है।'' डॉ. जेरू ने समझाया।

''डॉक्टर काका! मुझे किसी भी खाने की वस्तु में स्वाद नहीं आता है।'' सोनू ने कहा।

''स्वाद कैसे आएगा बेटा! तुम्हारी जीभ तो बुखार के कारण गंदी है। इस पर तो मैल की परत जमा हो गई है।'' ''परन्तु इसका स्वाद से क्या संबंध है?'' सोनू ने कुछ हैरानी से पूछा।

''बहुत संबंध है, बेटा सोनू! हम जो कुछ भी खाते हैं, उसका स्वाद हमें जीभ से ही ज्ञात पड़ता है कि वह खट्टी, मीठी, कड़वी या चरपरी है। ज्ञात है कैसे?'' ''नहीं तो..... आप बताइए न?''

''दरअसल जीभ पर छोटे–छोटे तन्तुओं से युक्त सैकड़ों दानेदार उभार होते हैं। इन्हें स्वाद कलिकाएँ कहते हैं। इन्हीं से हमें किसी वस्तु के स्वाद के बारे में जानकारी मिलती है। पर जब जीभ मैली होती है तो मैल की परत इन स्वाद कलिकाओं को ढँक लेती है। इसलिए हमें किसी भी खाने की वस्तु का स्वाद ठीक–ठीक पता नहीं चल पाता है। मुख का स्वाद भी कड़वा–कड़वा सा लगता रहता है।'' डॉ. जेरू ने समझाया।

''ओह, तभी डॉक्टर काका! मुझे हर खाने की चीज कड़वी–कड़वी सी लगती है।'' सोनू के बात समझ में आ गई थी।

''पर डॉक्टर साहब! सोनू ठीक तो हो जाएगा?'' चिंतित होते हुए मोनू ने पूछा।

''हाँ मोनू जी, आप बिल्कुल भी चिंता मत कीजिए। आपका बेटा बिल्कुल ठीक हो जाएगा। पर आपको इसके खून की एक जाँच करवानी पड़ेगी।'' डॉ. जेरू ने उसे दिलासा देते हुए कहा।

''वह किस लिए?''

''रोग का ठीक–ठीक पता लगाने के लिए और रोग कितना बढ़ चुका है, यह भी जानने के लिए।''

''यह कौन–सी जाँच है?''

''इसे विडाल टेस्ट कहते हैं। इससे टायफायड रोग की सही–सही जानकारी हो जाती है।'' एक पर्चे पर जाँच और कुछ दवाइयाँ लिखते हुए डॉ. जेरू बोले, ''यह जाँच करवाने के बाद मुझ से कल आकर मिलें। तब तक ये दवाइयाँ खिलाइए। खाने में केवल दूध और फल ही दें और पूरी तौर से सोनू को आराम करवाएँ।''

मोनू ने डॉ. जेरू की बात मानकर ऐसा ही किया। कुछ ही दिनों में सोनू बिल्कुल ठीक हो गया। अब जब भी घर में कोई बीमार पड़ता, वह तुरन्त ही डॉक्टर जेरू से सलाह लेता ; जिससे कहीं रोग बिगड़ न जाए।

अब डॉक्टर जेरू उनके फैमिली डॉक्टर हो गए थे।

– फर्रूखाबाद (उ. प्र.)

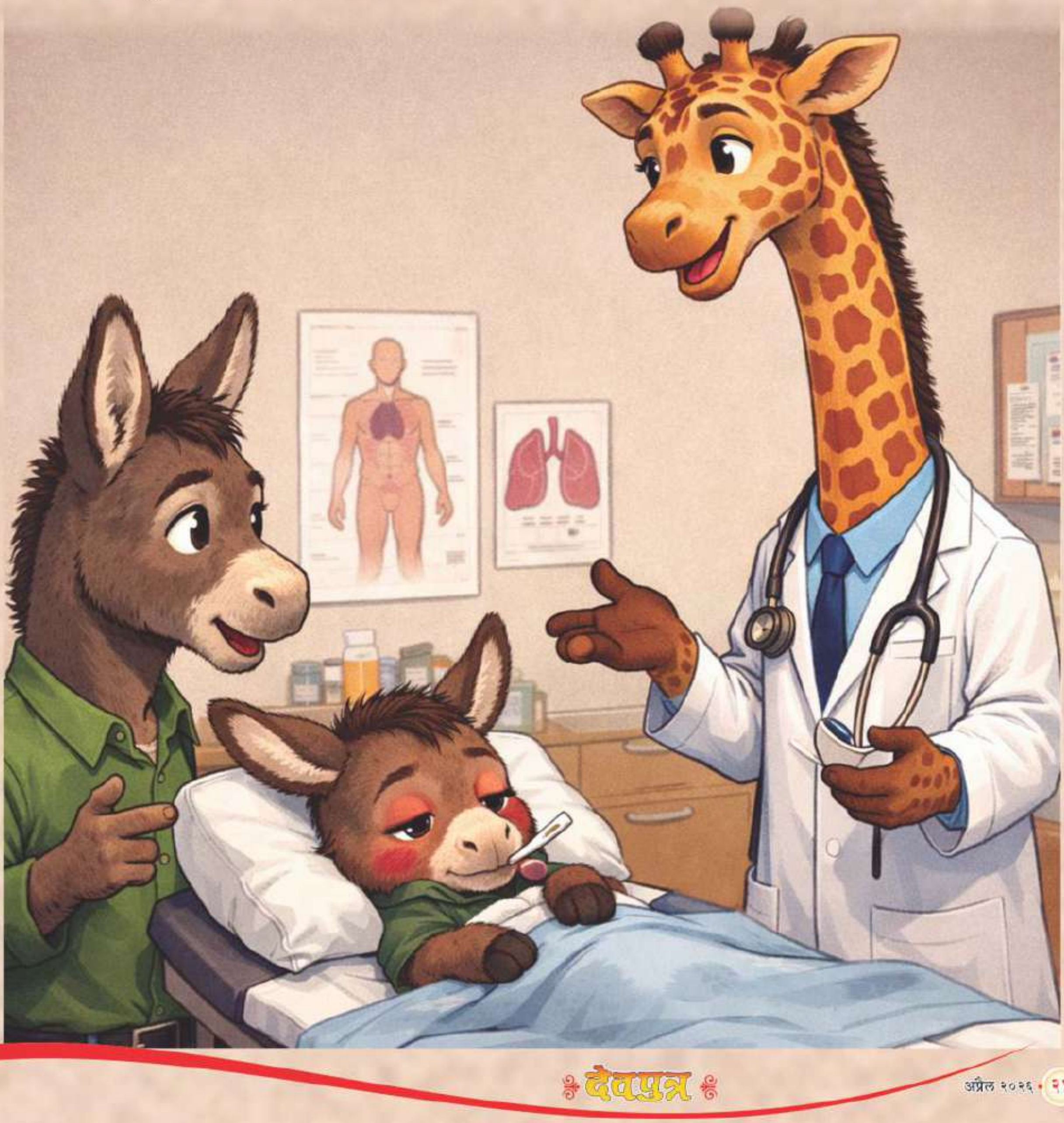

चैम्पियन दादी

– पूनम पांडे

आज मनु दादी को अत्यंत स्नेह से समझा रहा था कि– ''आप प्रयत्न तो करो दादी जरा–सी दूर और जरा–सा और। वाह! दादी वाह! आज बीस मिनट धीरे–धीरे सैर कर ली। तो आपको ताजातरीन अनुभव हुआ। कल सुबह फिर आयेंगे सैर करने।''

''ठीक है मनु महाराज! मेरे गुरु!'' कहकर दादी खुशी से खुलकर हँसने लगी।

वस्तुत: दादी स्वयं ही आलस करने लगी थीं। आज उनको सचमुच बहुत अच्छा लग रहा था। मनु और दादीमाँ आनंद भरी सैर कर के अभी घर लौटे ही थे कि तभी कॉलोनी की अध्यक्ष उनके घर आई और उन्हें कॉलोनी वालों द्वारा आयोजित एक रंगारंग कार्यक्रम में आने का निमंत्रण दिया। वहाँ दादी माँ को

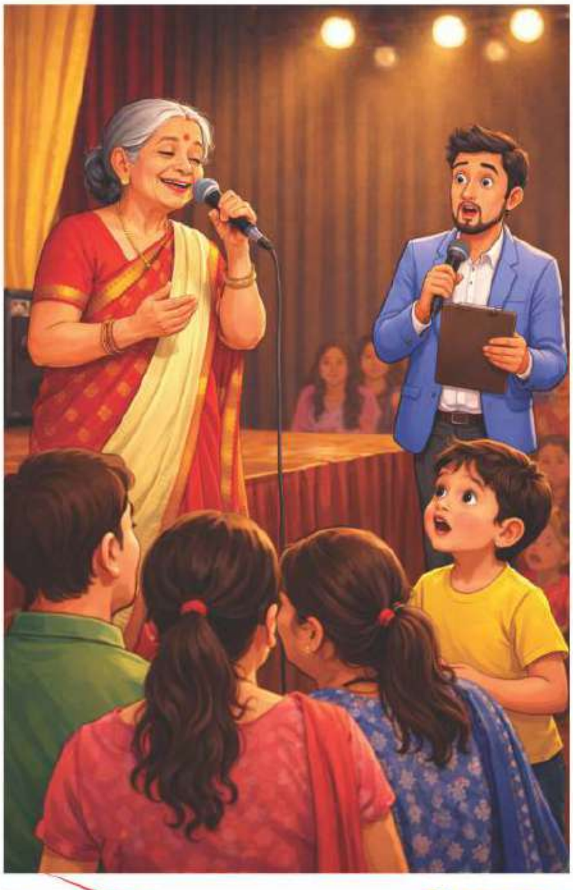

भी विशेष रूप से बुलाया गया था। बस, इसी खुशी में दादीमाँ अपना रक्तचाप, अपनी कमजोर नजर और दूसरी परेशानियाँ भूल–सी गई थीं। मनु ने दादी माँ से उनका व्यवहार पूछा तो वह बोली– ''कुछ भी हो जाएँ मैं तो कार्यक्रम देखने अवश्य जाऊँगी।''

दादी ने अलमारी खोली और एक मनपसंद साड़ी निकाल कर बाहर रख भी दी। ''किन्तु दादी माँ आप तो कमर दर्द और सर दर्द की शिकायत करती हो अब वहाँ पर जाकर नहीं होगा?'' यह कहकर मनु ने दादी को प्यार से चिढ़ाया किन्तु दादी को उस पर खूब लाड़–प्यार ही उमड़ आया। वह बोली ''मनु बेटे! सच पूछा जाए तो इंसान की आयु उतनी ही होती है जितनी वह अनुभव करता है।'' अब तो दादी माँ दोपहर से शाम के होने की प्रतीक्षा करने लगीं।

कॉलोनी के उद्यान में सजावट तो सुबह से ही प्रारंभ हो गई थी। शाम से पहले दादी माँ के लिए एक फोन भी आ गया कि अवश्य आना। अब तो दादी माँ तो खुशी और उत्साह से तैयार होने लगीं। दादी ने मैचिंग गहने भी पहने। वह घर में सबसे पहले तैयार हो गई थी। ठीक समय पर दादी टहलते हुए उद्यान में पहुँच गई। दादी माँ का कॉलोनी अध्यक्ष ने आगे बढ़कर स्वागत किया। उनको सबसे आगे वाली पंक्ति पर लगे सोफे पर बिठाया गया। दादी का मन आनंद से भर रहा था। अभी मंच पर साउंड वाले तैयारी कर रहे थे।

तकनीकी गड़बड़ी को ठीक कर रहे थे। तभी मंच से एक घोषणा हुई कि किसी कारणवश आज का सांस्कृतिक कार्यक्रम विलंब से आरंभ हो रहा है। दरअसल जिस कलाकार समूह को स्वागत अभिनंदन गीत के रूप में आज अपनी पहली प्रस्तुति देनी थी वह ट्रेन लेट होने की वजह से समय पर नहीं आ सके हैं।

यह सुना तो दादी ने आव देखा न ताव वह अपनी जगह से उठी और हौले-हौले चढ़ती हुई मंच पर जा पहुँची। अब माइक लेकर दादी माँ ने अपने शाला के दिनों का कंठस्थ स्वागत गीत गा दिया। दादी ने इतना दिल लगाकर गाया कि दर्शक और श्रोता भाव विभोर हो उठे।

तालियों की गड़गड़ाहट ने दादी का मन किसी कलाकार जैसा कर दिया था। अब कार्यक्रम विधिवत शुरू हो गया। मनु भी आ गया था। वह पीछे बैठा था। उसकी ताली तो दादी ने अलग से ही सुन ली थी। आयोजकों ने दर्शकों को स्नैक्स आदि सर्व करने के लिए बेटर बुला रखे थे। एक वेटर दादी के पास बार-बार आ रहा था। जा रहा था। कुछ मिनट बाद दादी ने मनु को मोबाइल पर संदेश भेजा। मनु मेरे दाहिने हाथ से कलाई घड़ी गायब है। मनु ने संदेश पढ़ा और हौले-हौले दादी के पास आकर बैठ गया।

उसने दादी के कान में फुसफुसाकर कहा दादी एकदम ऐसे ही चुपचाप बैठी रहो। शोर मत करना। बेकार में सारी व्यवस्था बिगड़ती जाएगी।

अभी कुछ और कलाकारों की प्रस्तुति बाकी है। पब्लिक को परेशान करके हम सबका नुकसान होगा। उसने दादी को संकेत किया कि अपना मोबाइल देखो। दादी ने मोबाइल देखा। उसमें एक लंबा संदेश था। मनु ने लिखा था कि एक युवक चाय पानी नमकीन देने उनके पास बार-बार आ रहा था। ठहरकर कुछ उठा रहा था। जमीन में बैठकर कुछ कर रहा था। कौन था दादी ?''

यह संदेश पढ़ा तो दादी का माथा ठनका। वह समझ गई। दरअसल वह वेटर एक बार उनका हाथ पकड़कर पानी का गिलास थमा गया। दूसरी बार भी वह हाथ थमाकर चाय दे गया था। दादी को मनु की बुद्धिमानी पर गर्व हुआ। अब दादी मंद-मंद मुसकाने लगी। इस बार वह वेटर नजर आया तो दादी ने उसे संकेत करके अपने पास बुला लिया।

इस बार दादी ने उसके दोनों हाथ थाम लिये। उसकी आँखों में आँखें डालकर पूछा- ''मेरी घड़ी।'' यह सुनकर वह युवक घबरा गया। चारों ओर वैसे भी सुरक्षा के लिए पुलिस थी। अब तो भाड़ा गया फूट। हो गई फजीहत। उसे दादी की दोनों आँखों में जेलखाना दिखाई दिया। उसने अपनी जेब से घड़ी निकाली और चट से दादी ही हथेली पर रखकर वहाँ से भागा। दादी ने मनु को मैसेज कर दिया। अब वेटर बचता-बचाता टेंट से बाहर आया तो मनु ने उसे थाम लिया।

मनु को देखकर वह घबरा गया। ''लगाता हूँ पुलिस चौकी को फोन।'' मनु बोला। वह रोने लगा।'' मत करो। ऐसा मत करो। मैं भी एक इंसान हूँ। लालच आ गया था। अब कभी न करूँगा।'' मनु का हाथ छुड़ाकर वह सरपट भाग लिया।

अब मनु ने उसे क्षमा करते हुए लौटकर वापस सांस्कृतिक कार्यक्रम का आनंद लिया।

कुछ देर बाद कार्यक्रम समाप्त हो गया। दादी माँ प्रसन्न थी। आज की शाम मनु और दादी दोनों के लिए यादगार रही। न केवल नृत्य और संगीत की सुनहरी शाम का आनंद लिया बल्कि एक चोर को भी पकड़ा। उसके बाद वह युवक कॉलोनी में फिर कभी न दिखाई दिया।

- अजमेर (राजस्थान)

लक्ष्य की ओर

– उमेश कुमार चौरसिया

पात्र

बालक– चाणक्य

माँ–

सूत्रधार

दृश्य–१

(मंच पर प्राचीन गाँव के मकान का बरामदा दिखता है। खम्बे के सिरहाने बैठी माँ रो रही है। तभी मुंडे हुए सिर पर बड़ी–सी चोटी वाला एक बालक आता है।)

बालक– (माँ के पास आता है) ये क्या माँ! तुम फिर रोने लगी।... (पास बैठकर) पिताश्री नहीं रहे उसका दु:ख तो मुझे भी है.... पर तू रो मत माँ, मैं हूँ ना... मैं तुझे कोई कष्ट नहीं होने दूँगा....

माँ– पुत्र! इस समय तुम्हारे पिताश्री का वियोग मेरे रोने का कारण नहीं है।

बालक– तो फिर क्या कारण है माँ?

माँ– प्रिय पुत्र! तुम्हारा आने वाला भविष्य मेरे दु:ख का कारण है।

बालक– भविष्य!...... ऐसा क्या है मेरे भविष्य में माँ?

माँ– तेरे भाग्य में छत्रपति सम्राट होना लिखा है रे.....

बालक– तो! यह तो खुशी की बात होनी चाहिए नाम तुम्हारे लिए।

माँ– नहीं पुत्र! यह खुशी की बात नहीं है... यह मेरे लिए दुर्भाग्यपूर्ण बात हैं।

बालक– ऐसा क्यों माँ?

माँ– इसलिए पुत्र! कि राज्याधिकार पाकर लोग अपने सगे–संबंधियों की उपेक्षा करने लगते हैं। तुम भी राजा बन जाओगे तो मुझे भी भूल जाओगे। यही सोचकर रोना आ रहा है मुझे।

बालक– तो भला तुमने ये कैसे जान लिया कि भविष्य में मैं राजा बनूँगा?

माँ– वो तो तुम्हारे सामने के ये दो दाँत देखकर। शास्त्रों में लिखा है कि तुम्हारे जैसे दाँतों वाला मनुष्य अवश्य ही राजा बनता है।

(यह सुनते ही बालक उठता है, पास ही पड़े एक पत्थर को उठाकर अपने दाँतों पर मारता है और दोनों दाँत तोड़ देता है, फिर पत्थर को दूर फैंक देता है।)

माँ– (घबराकर उठते हुए) अरे! ये तूने क्या किया पुत्र.....

बालक– घबराओ मत माँ! मैंने तो बस तुम्हारी चिन्ता दूर करने का उपाय किया है। मैंने

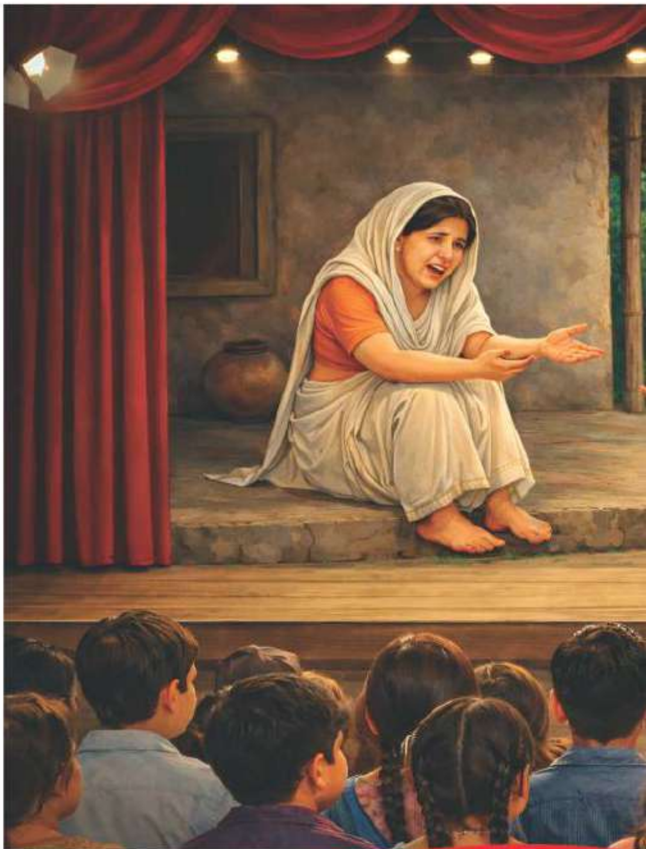

अपने दोनों दाँत ही तोड़ दिये हैं, बस अब तो मैं राजा बनने से रहा।

माँ– (उसे दुलारते हुए) ये क्या कर डाला पुत्र! देख कितना खून बहने लगा है।

बालक– मेरा थोड़ा-सा खून क्या है माँ! तुम्हारी इस बड़ी चिन्ता के सामने। तुम्हारे सुख के लिए मैं संसार की बड़ी से बड़ी दौलत भी ठुकरा सकता हूँ माँ! तुम्हारी ममता और प्रेम के आगे इन दाँतों का क्या मूल्य है। मेरे लिए तो तुम्हारे आँचल में ही सच्चा स्वर्ग है माँ.....!

(माँ गद्‌गद होकर बालक को बाहों में भरकर दुलारने लगती है।)

दृश्य समाप्त

दृश्य-२

(आज फिर माँ बरामदे में बैठी हुई रोने लगी है। तभी बालक आता है।)

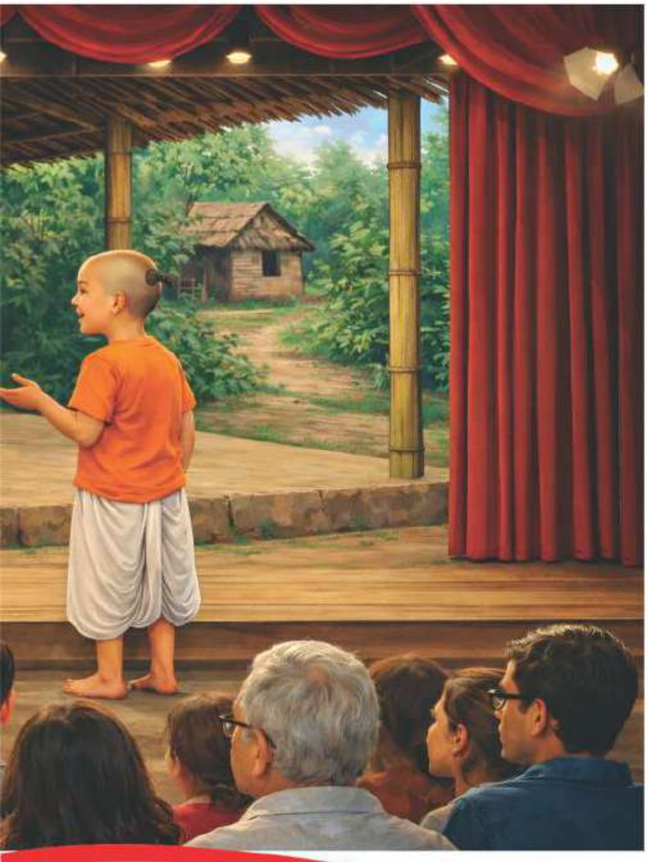

बालक– अरे माँ! तू आज फिर रोने लगी। अब क्या हुआ तुझे?

माँ– कुछ नहीं पुत्र! बस ऐसे ही...।

बालक– ऐसे ही क्या माँ...! ऐसे ही भी कोई रोता है क्या भला? बता ना क्या हुआ है? दाँत तो मेरे रहे नहीं फिर तुम्हारा भाग्य तो सुधर ही गया ना माँ?

माँ– हाँ रे! मुझे मेरे भाग्य पर तो कोई पछतावा नहीं है रे।

बालक– तो फिर क्या बात है माँ? बता ना जल्दी से...

माँ– आज मैं तेरे नहीं भारत के दुर्भाग्य पर रो रही हूँ।

बालक– भारत का दुर्भाग्य।

माँ– हाँ, भारत का दुर्भाग्य। आज जो मैंने देखा उसे भारत का दुर्भाग्य न कहूँ तो और क्या कहूँ।

बालक– ऐसा क्या देख लिया माँ?

माँ– मैंने वहाँ नदी के तट पर देखा कि एक स्त्री अपने मृत पुत्र का शव लेकर आयी। शव पर कफन का टुकड़ा तक भी नहीं था। तब उस स्त्री ने अपनी सफेद आधी साड़ी फाड़कर उसे ही कफन बनाकर पुत्र के शव को लपेटा और गंगाजी में बहा दिया।

बालक– तो कफन तो मिल गया न?

माँ– मिल तो गया लेकिन...

बालक– लेकिन क्या...

माँ– शव को नदी में बहाते ही वह स्त्री भी नदी में कूद गयी.....

बालक– ओ! तो क्या वह मर गयी?

माँ– नहीं, उसने पुत्र के बहते शव से कफन वापिस उतार लिया और लौट आयी।

बालक– ऐसा क्यूँ किया उसने?

माँ– मैंने भी यही पूछा उससे, तो वह रोते हुए बोली कि उसके पास वहीं एक साड़ी ही है, वो आधी साड़ी को फिर से सिलकर पहनेगी इसीलिए कफन

वापिस लायी है।... (रुआंसे स्वर से) अब हमारा भारत इतना गरीब हो गया है कि एक माँ के पास पुत्र के शव के लिए कफन तक नहीं.... यह दुर्भाग्य नहीं तो क्या है....।

बालक– किन्तु हमारे भारत की इस दुर्गति का कारण क्या है माँ?

माँ– कारण है चारों ओर फैली निर्धनता।

बालक– और निर्धनता का कारण?

माँ– आपसी द्वेष और फूट। सैकड़ों राजाओं ने भारत को छोटे–छोटे टुकड़ों में विभाजित कर दिया है। अपने निजी स्वार्थ और अभिमान के लिए सभी आपस में लड़ते रहते हैं। इसी का लाभ उठाकर बार–बार विदेशी आक्रांता भारत आते हैं और देश का धन लूटकर ले जाते हैं।

बालक– तब तो सब राजाओं को एकजुट हो जाना चाहिए।

माँ– होना तो चाहिए... पर यह हो कैसे... कौन करे इसके लिए प्रयत्न.....।

बालक– मैं करूँगा माँ......!

माँ– क्या करेगा तू?

बालक– मैं आज प्रतिज्ञा लेता हूँ माँ कि मैं अखण्ड भारत का निर्माण करूँगा।

माँ– (हँसकर) रहने दे.... अभी बच्चा है तू...

बालक– बच्चा तो हूँ.... लेकिन मेरी प्रतिज्ञा अटल है......।

माँ– पर तूने तो राजा न बनने की भी तो शपथ ली है न मेरे सामने।

बालक– हाँ, मैं राजा कभी नहीं बनूँगा... किन्तु मेरी प्रतिज्ञा के लिए राजा बनने की आवश्यकता भी नहीं है... (दृढ़ता से) यह मेरी दृढ़ प्रतिज्ञा है माँ...! मैं अखण्ड भारत के निर्माण में पूरा जीवन अर्पित कर दूँगा।

(अंतिम वाक्य गूँजता रहता है। सूत्रधार का

प्रवेश)

सूत्रधार– यह दृढ़ प्रतिज्ञा करने वाला बालक ही बना आचार्य चाणक्य। वे ही आचार्य चाणक्य जिन्होंने दुष्ट शासकों को सिंहासन से हटाकर चन्द्रगुप्त को भारत का सम्राट बनाया, सिकंदर के उत्तराधिकारियों को भारत भूमि से बाहर भगाया और अखण्ड भारत के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

– अजमेर (राजस्थान)

खोजो तो जानें

– चाँद मोहम्मद घोसी

शाकाहारी लोग विभिन्न प्रकार की दालों के साथ रोटी खाकर अपनी भूख शांत करते है। नीचे की पंक्तियों में आठ दालों के नाम खोजों तो जानें।

१) राजस्थान राज्य का एक नगर चौमूं गबरू जवानों को प्रशिक्षिण देने के लिए प्रसिद्ध है।

२) रामो वामो ठनठनाते चांदी के सिक्कों की टकसाल दिल्ली में खुलवाना चाहते हैं।

३) पहलवान हिन्द केसरी चन्दगीराम सूरमाओं की व्यायाम शाला के अध्यक्ष रह चुके हैं।

४) वन विभागाधिकारी अजअर हरदिल अजीज व्यक्ति है।

५) गरउड़ दरख्तों के ऊपर बैठकर शिकारियों से अपने जान की रक्षा करते हैं।

६) नगर पालिका के अध्यक्ष ने सिफारिश करते हुए अधिशाषी अधिकारी से कहा, हमारा जमादार कर्मियों का सरदार बनेगा।

७) सोने का चम्मच नारायणराम की तिजोरी में बंद है।

८) सदाराम टरकाने वाले मित्रों से मित्रता का हाथ कभी नहीं बढ़ाता।

– मेड़ता सिटी (राजस्थान)

उत्तर– १) मूंग, २) मोठ, ३) मसूर, ४) अरहर, ५) उड़द, ६) राजमा, ७) चना, ८) मटर।

बौद्धिक व्यायाम

दोस्तो, बता सकते हो कि ये दोनों किन चीजों के बारे में बातें कर रहे हैं?

उत्तरः अधिकांश चीटियों की पांच आंखें होती हैं और केंचुआ के चार जोड़ी हृदय होते हैं।

ना दायें ना बायें

– रजनीकांत शुक्ल

व्योमा प्रिया का घर तमिलनाडु राज्य के शहर कोयम्बटूर में था। वे जहाँ रहती थीं, उसी परिसर में एक उद्यान बना हुआ था। अधिकांश शाम के समय या छुट्टी के दिन बच्चे उसमें खेलने आते थे। उस उद्यान में बच्चों के खेलने के लिए फिसलपट्टी और कई तरह के झूले भी लगे थे। बाकी समय तो उद्यान में सन्नाटा रहता किन्तु अक्सर शाम के समय पास-पड़ोस के बच्चों के आ जाने से उद्यान में रौनक आ जाती उसमें चहल-पहल बढ़ जाती। बच्चों के शोर और उनकी किलकारियों से उद्यान का कोना-कोना गुंजायमान हो जाता।

उस दिन भी जब समय मिला तो कुछ बच्चे उद्यान में आ गए। जिनमें छः वर्ष का नन्हा जियांश रेड्डी और नौ साल की व्योमा प्रिया भी थी। उद्यान की सारी जमीन उस समय गीली थी। इसलिए उस समय उद्यान में आए बड़े लोग उद्यान की गीली जमीन वाली घास में घुसने से कतरा रहे थे। वे उसके आसपास चारों ओर बने पैदल पथ पर घूम टहल रहे थे या किसी किनारे की बैंच पर बैठे बातें कर रहे थे।

किन्तु बच्चे तो बच्चे ठहरे। वे उद्यान की उस घास में बिना गीलेपन की परवाह किए घुस गए और धमाचौकड़ी मचाने लगे। बिना इस बात की भी परवाह किए कि इससे उनके हाथ-पाँव और कपड़े गंदे हो जाएँगे और घर जाने पर उनकी डाँट भी पड़ सकती है। वे अभी वहाँ खेल ही रहे थे कि जियांश रेड्डी को जाने क्या सूझा वह तेजी से दौड़ता हुआ एक फिसलपट्टी की ओर लपका। बिना यह जाने कि उसका यह जाना कितना खतरे से भरा था।

हुआ यह था कि उस फिसलपट्टी के निचले सिरे पर एक भूमिगत बिजली की मोटी केबल जा रही थी। दुर्भाग्य से वह बिजली की केबल वहीं पर पहले से क्षतिग्रस्त थी। जिसके कारण उस फिसलपट्टी के गीले होने के कारण में उस समय करंट आ रहा था। किन्तु इन सब बातों से अनजान जियांश दौड़ता हुआ गया और फिसलपट्टी को जाकर उसने एकदम से पकड़ लिया। पकड़ने की देर थी कि उसके सारे शरीर में करंट दौड़ गया।

एक तेज झटका और हाथ से लेकर सारे शरीर में सुइयाँ चुभने जैसी झुनझुनी फैल गई। जियांश को लगा कि उसके शरीर की माँसपेशियों में भयंकर ऐंठन और तेज जलन जैसी अनुभव हुई। जियांश को ऐसा लगा कि जैसे उसकी साँस रुकने लगी हो। उसने अपना हाथ छुड़ाने का प्रयत्न किया किन्तु वह शरीर में हो रही एठन के कारण इसमें सफल न हो सका।

उसे अचानक से बेचैनी और घबराहट हुई लगा कि अपने आप को बचा पाना अब उसके वश में नहीं है तो उसने सहायता के लिए अपने चारों ओर देखा। संयोग से पास दिख रही व्योमा प्रिया की ओर उसने कातर निगाहों से देखा। व्योमा की आँखें भी उस समय जियांश की ओर थीं। वह एक झटके में सारी

स्थिति समझ गई। उसने देर लगाए बिना जियांश की ओर दौड़ लगा दी।

वह जियांश के पास पहुँच भी गई। उसे पता था कि वह दूर रहकर जियांश की सहायता कर उसे करंट से छुड़ा सकती है। किन्तु तेजी से जियांश की ओर बढ़ती व्योमा प्रिया को इस बात का ध्यान नहीं रहा कि नीचे पार्क की वह जमीन इतनी गीली है कि वह भी करंट के प्रभाव में पूरी तरह आ जाएगी और वही हुआ भी। व्योमा जैसे ही जियांश के पास पहुँची तो बजाय उसे बचा पाने के स्वयं भी उस करंट की चपेट में आ गई।

जियांश बिजली की गिरफ्त में आ चुका था और उस समय व्योमा प्रिया सुरक्षित स्थान पर खड़ी थी। वह चाहती तो स्वयं को सुरक्षित रखते हुए दूसरों को सहायता के लिए बुला सकती थी अथवा कोई दूसरा तरीका अपना सकती थी। किन्तु उसका कोमल मन ऐसा था जो किसी दूसरे को कष्ट में देखकर स्वयं को रोक नहीं पाता था। बिना अपनी जान की परवाह किए वह आगे बढ़ी और इस तरह वह स्वयं को भी न बचा सकी।

बाद में जब तक लोगों को खबर हुई और सभी उसे बचाने को दौड़े आए तब तक बहुत देर हो चुकी थी। व्योमा प्रिया को न बचाया जा सका मगर अपनी जान देकर दूसरे की जान बचाने का संदेश व्योमा ने अवश्य दे दिया। निस्वार्थ भावना से किया गया यह वीरता का कार्य सचमुच श्लाघनीय था। जिसके लिए सभी ने व्योमा प्रिया के इस कार्य की प्रशंसा की।

भारत सरकार के महिला एवं बाल विकास मंत्रालय ने व्योमा प्रिया को मरणोपरांत प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल वीरता पुरस्कार से सम्मानित किया। वीर बाल दिवस २६ दिसम्बर २०२५ के अवसर पर देश की राष्ट्रपति माननीय द्रौपदी मुर्मू जी ने प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार प्रदान किए। उनके हाथों दिल्ली के विज्ञान भवन में व्योमा प्रिया की माँ अर्चना शिवरामकृष्णन ने बेटी की ओर से इस पुरस्कार को स्वीकार किया और कहा कि यह अवसर मेरे लिए दुख-सुख का मिला-जुला अनुभव है। मुझे खुशी है कि व्योमा प्रिया की वीरता की भावना को राष्ट्रीय स्तर पहचान मिली है किन्तु दुख इस बात का है कि वह इस पुरस्कार को लेने के लिए स्वयं यहाँ पर न आ सकी।

नन्हे मित्रो!

चलते सदा सामने होकर, ना दाएँ ना बाएँ
हम सुनते दिल की आवाजें जो अंदर से आएँ।
रोक नहीं पाते हम खुद को आगे बढ़कर आएँ
होगा क्या अंजाम न सोचें जिएँ याकि मर जाएँ।।

– नई दिल्ली

जैसी हूँ वैसी अच्छी

– ओमप्रकाश क्षत्रिय 'प्रकाश'

''मोना! तुम चिड़िया बनना चाहती थी ना ?'' उसके सामने खड़ी सोनपरी ने कहा तो मोना खुशी से उछल पड़ी, ''हाँ! मुझे एक दिन के लिए चिड़िया बनना था।''

मोना उठकर सोनपरी से लिपट गई। उसे सोनपरी बहुत अच्छी लग रही थी। उसने सोनपरी को छूआ। मुलायम पंखों को हाथ लगाया। वहाँ सच में सोनपरी खड़ी थी।

''तो बना दूँ तुम्हें चिड़िया।'' सोनपरी ने उसकी सहमति ली।

''हाँ!'' मोना बोली– ''मेरी यही इच्छा थी। फिर मुझे आसमान की सैर भी करवा दीजिएगा।''

सोनपरी ने छड़ी उठाई। उसके चारों ओर घुमाया। मोना एक चिड़िया बन गई। तभी सोनपरी ने कहा– ''मुझे दूसरा काम है। चलो जल्दी। तुम्हें आसमान की सैर करा दूँ।''

''चलो!'' मोना को भी जल्दी थी। उसने पंख फड़फड़ाए। वह उड़ने लगी। यह देखकर उसने सोनपरी से कहा– ''मैं तो सचमुच उड़ सकती हूँ।''

''हाँ'' सोनपरी बोली, ''तुम चिड़िया जो बन गई हो।'' कहते हुए सोनपरी तेजी से उड़ी। मोना पीछे–पीछे उड़ने लगी।

''आप तो बहुत तेज उड़ती है।'' मोना ने पूछा तो सोनपरी बोली, ''तुम छोटी–सी चिड़िया तो इसलिए धीरे उड़ती हो। मैं बड़ी परी हूँ इसलिए तेज उड़ती हूँ।''

तभी उड़ते–उड़ते सोनपरी चिल्लाई, ''जरा नीचे झुको। गिद्ध आ रहा है।'' किन्तु चिड़िया बनी मोना झुक नहीं पाई।

सोनपरी सावधान थी। उसने झट से मोना को पकड़ा। नीचे कर दिया। गिद्ध उसके पास से निकल गया, ''अभी तो तुम गिद्ध पक्षी से टकरा जाती।''

यह सुनते ही मोना का दिल तेजी से धड़कने लगा। तभी सोनपरी ने कहा, ''मुझे एक काम से जाना है। तुम यहाँ आसमान में उड़ कर आनंद लो। मैं बाद में आती हूँ।'' यह कहकर सोनपरी जाने लगी।

मोना को अब आसमान में उड़ने में डर लगने लगा था। वह डरते हुए बोली, ''मैं आसमान में अकेले उड़ लूँगी ?''

''हाँ'' सोनपरी बोली, ''सभी पक्षी अकेले या झुंड में उड़कर आनंद लेते हैं। तुम भी आनंद लो, ''कहकर सोनपरी चली गई। मोना क्या करती। वह अकेले ही आसमान में उड़ने लगी। उसने नीचे देखा। वह घंटाघर के ऊपर उड़ रही थी। ऊपर से घंटाघर का दृश्य बहुत अच्छा व आकर्षक लग रहा था।

नीचे कार छोटी–छोटी दिख रही थी। ऊपर से बाजार में जाते लोगों के सिर नजर आ रहे थे। गली–गली में इसी प्रकार का दृश्य था। तभी मोना ने सोचा कि उसके पास मोबाइल होता तो इसका फोटो अवश्य उतार लेती। फोटो बहुत ही शानदार दिखता। तब वह अपने सभी मित्रों को यह फोटो दिखती।

यह सोचते हुए वह आगे उड़ी जा रही थी। सामने उसका विद्यालय था। उसे देखकर मोना को कुछ बातें याद आई। उसके कक्षा के कमरे में एक चिड़िया का बच्चा घोंसले से नीचे गिर गया था।

''चलो! चिड़िया के बच्चे को उठाकर वापस घोंसले में रख देती हूँ।'' यह सोचकर वह कक्षा के कमरे में गई।

कमरे में चिड़िया का बच्चा अपनी माँ के पास बैठा हुआ था। यह देखकर उसे अच्छा लगा। तभी उसे ध्यान आया कि कमरे के उजालदान में बने कबूतर के घोसले से अंडे नीचे गिर पड़े थे। उसे उठाकर घोंसले में रख देना चाहिए। यह सोचकर वह उजालदान के पास गई।

वहाँ जाते ही वह चौंक पड़ी। वहाँ पर एक बिल्ली बैठी थी। वह कबूतर के अंडे खा चुकी थी। एकाएक मोना को देखकर उस पर झपटी।

मोना असावधान थी। उसे पता नहीं था कि बिल्ली चिड़िया को पकड़ कर खा जाती है, इसलिए निश्चित होकर उड़ रही थी।

बिल्ली ने झट से उसे मुँह में पकड़ा। अपने दाँत गड़ा दिए। उसके शरीर में तेज दाँत लगने से जोड़ का दर्द हुआ। वह चीख उठी, ''बचाओ! बचाओ!''

तभी बिल्ली उसे पकड़कर फर्श पर गिरी। उसे जोर की चोट लगी। तभी उसकी आँखें खुल गई। उसने देखा वह पलंग से नीचे गिरी हुई थी। माँ उसके सामने खड़ी थी।

''क्या हुआ मोना?'' माँ ने पूछा– ''कोई डरावना सपना देखा हैं?''

''हाँ माँजी!'' कहते हुए उसने माँ को अपना पूरा सपना सुना दिया। जिसे सुनकर माँ बोलीं– ''तो तुम चिड़िया बनना चाहती थीं?''

''हाँ माँजी!'' मोना बोली– ''किन्तु माँजी! मैं जैसी हूँ वैसी ही बढ़िया हूँ। चिड़िया को तो बहुत ही मुसीबत देखना पड़ती है।''

यह कहकर मोना प्रसन्न हो गई।

''ठीक है! तुम मंजन करके मुँह धो लो। मैं चाय बना कर लाती हूँ।''

कहकर माँ रसोई में चाय बनाने चली गई और मोना मंजन करके तैयार होने लगी।

– नीमच (म. प्र.)

कीचक वध

– मोहनलाल जोशी

पांडव राजा विराट के राज्य में रह रहे थे। उनका अज्ञातवास चल रहा था। कोई भी पांडवों को पहचानता नहीं था। राजा विराट का साला भी वही रहता था। उसका नाम कीचक था। वह बहुत बलवान था, परन्तु दुष्ट प्रवृत्ति का था। उसने सैरन्ध्री (द्रौपदी) को देखा। वह महारानी की सेवा करती थी। कीचक ने अपनी बहिन (महारानी) से कहा ''मैं सैरन्ध्री पर मोहित हूँ। इसे मेरे पास भेजना।''

द्रौपदी (सैरन्ध्री) कीचक की दुष्टता जानती थी। उसने अपने पति भीम को सारी बात बताई। भीम ने कहा ''द्रौपदी! तुम कीचक को रात में रसोई में बुला लो।'' कीचक काम के नशे में अंधा था। वह रात को रसोई घर में आ गया। भीम द्रौपदी का वेश बनाकर बैठ गया। कीचक को द्रौपदी पर झपटते देख भीम ने दबोच लिया। वह बलवान होकर भी महाबली भीम के आगे कुछ न कर सका।

उत्तरा व अभिमन्यु का विवाह

कीचक का वध हो गया। दूर देशों में यह समाचार फैल गया। कौरवों ने सोचा–कीचक का वध भीम के अलावा कोई नहीं कर सकता। पांडवों का अज्ञातवास पूरा हो गया था। पांडव फिर अपने असली वेश में आ गए। अर्जुन राजकुमारी उतरा को संगीत व नृत्य सिखाता था। उतरा को ज्ञात हुआ कि यह वीर अर्जुन है। उसने अर्जुन से विवाह का प्रस्ताव रखा। अर्जुन ने कहा ''तुम मेरी शिष्या हो। शिष्या पुत्री के समान होती है। तुम्हारा विवाह मेरे पुत्र अभिमन्यु से करवाऊँगा। वह भी मेरे समान वीर है। अभिमन्यु श्रीकृष्ण का भानजा है।'' बाद में श्रीकृष्ण भी मत्स्य देश आ गए। अभिमन्यु का उत्तरा से विवाह हुआ। राजा विराट अर्जुन के समधी बन गए।

श्रीकृष्ण का दूत कार्य

पांडवों का वनवास पूरा हो गया। उनके सभी मित्र राजा एकत्र हुए। द्रौपदी के भाई घृष्टद्युम्न ने कहा– ''हमें कौरवों को संदेशा भेजना चाहिए। पांडवों को उनका राज्य लौटा दें।''

श्रीकृष्ण दूत बनकर हस्तिनापुर गए। उन्होंने धृतराष्ट्र को पांडवों का संदेश सुनाया। दुर्योधन ने राज्य देने से मना कर दिया। श्रीकृष्ण ने कहा– ''हम आधे राज्य के अधिकारी हैं। तुम लोग पाँच गाँव ही दे दो। हम युद्ध नहीं करेंगे। अन्यथा भाइयों–भाइयों में युद्ध होगा।''

दुर्योधन ने श्रीकृष्ण को जेल में डालने का आदेश दे दिया। वह मूर्ख था। कृष्ण अत्यन्त कुपित हो गए। उन्होंने अपना विराट स्वरूप प्रकट किया। विराट स्वरूप देखकर सभी सभासद मूर्छित हो गए। कृष्ण के मुख में सृष्टि के दर्शन हो रहे थे। उन्होंने दुर्योधन को चेतावनी दी। ''दुष्ट दुर्योधन! तुमने मेरे हितवचन नहीं मानें। अब भीषण संग्राम होगा। ऐसा संग्राम होगा–जैसा सृष्टि में कभी नहीं हुआ।''

– बाड़मेर (राजस्थान)

बात में से बात

– ललित नारायण उपाध्याय

पात्र–परिचय

चुन्नू, मनीष, रजनीश, देवेंद्र, महेंद्र, अनुपमा, दिव्या, साधना आदि बालक–बालिकाएँ तथा बच्चों के चाचाजी।

(मंच पर सभी पात्र बैठे हैं। प्रश्नोत्तर का क्रम चल रहा है।)

चाचाजी– अच्छा बच्चो! देवेंद्र, रजनीश, महेंद्र, साधना, दिव्या और चुन्नू! आओ हम तुमसे कुछ सरल और मजेदार प्रश्न पूछते हैं। उत्तर दोगे न?

सब बच्चे– अवश्य!

चाचाजी– अच्छा बताओ, क्या हम आले में रूमाल बिछाकर सो सकते हैं?

मनीष– नहीं सो सकते हैं।

चुन्नू– अरे भाई! आले में रूमाल बिछाकर खटिया पर भला क्यों नहीं सो सकते? प्रश्न में यह थोड़े ही कहा गया है कि आले में सो सकते हैं। (रुककर) अच्छा, चाचाजी! एक प्रश्न का उत्तर दीजिए।

चाचाजी– हाँ, पूछो।

चुन्नू– एक छाते में दस व्यक्ति हैं। फिर भी, क्या कारण है कि कोई भी भीगता नहीं है?

चाचाजी– भाई! पहली बात तो यह है कि एक छाते में दस व्यक्ति समा ही नहीं सकते, फिर यदि वर्षा नहीं हो रही होगी तो भीगेंगे भी नहीं। ठीक है न! (रुककर) अच्छा, अब एक प्रश्न हमारा सुनो। मान लो, यदि एक वायुयान जब इंदौर से मुंबई जाता है तो उसे एक घंटा बीस मिनट लगता है; किन्तु जब वह मुंबई से इंदौर आता है। तब उसे अस्सी मिनट लगते हैं। भला ऐसा क्यों?

चुन्नू– चाचाजी! क्यों व्यर्थ में घुमा रहे हैं? एक घंटा बीस मिनट और अस्सी मिनट दोनों ही बराबर होते हैं। ठीक है न! (रुककर) अच्छा, अब बताइए कि हमने एक मटका नल के नीचे रखा है। नल से पानी भी आ रहा है; फिर भी क्या कारण है कि मटका नहीं भरता?

चाचाजी– अच्छा, मेरे बदले यदि इसका उत्तर मनीष दे दे तो चलेगा न?

चुन्नू– हाँ, चलेगा।

मनीष– इसलिए कि मटका उलटा रखा हुआ होगा। फिर वह भरेगा कैसे? (रुककर) अच्छा बताओ, दिव्या, कि चौके में रखी हुई वह कौनसी वस्तु है तो फटने पर आवाज नहीं करती?

दिव्या– दूध।

चाचाजी– शाबाश! अब एक और मजेदार प्रश्न सुनो। एक तालाब इतना छोटा है कि उसमें केवल एक ही मुर्गा बैठ सकता है। यदि वह अंडा देना चाहे तो बताओ, अंडा ऊपर रहेगा या नीचे?

चुन्नू– (आवाज लगाकर) मगर साहब मुर्गा अंडा देता भी है?

चाचाजी– अच्छा अनुपमा! तुम बताओ। बिजली की एक रेल तेज गति से जा रही है। इतने में हवा पूर्व के बदले पश्चिम की ओर बहने लगती हैं। भला बताओ, धुआँ अब पूर्व की ओर बहेगा या पश्चिम की ओर?

अनुपमा– पश्चिम की ओर।

चाचाजी– गलत। बिजली की रेल का इंजन धुआँ छोड़ता ही कहाँ है। (रुककर) अच्छा बताओ एक और मजेदार प्रश्न का उत्तर। कुछ नावें नदी किनारे ढीली रस्सी से बँधी हुई थीं। इतने में नदी में पानी बढ़ने से बाढ़ आ गई। बताओ, क्या वे नावें डूब गई होंगी? चुन्नू, तुम बताओ।

चुन्नू– नावें न डूबी होंगी, न बही होंगी;

क्योंकि वे बँधी हुई थीं। अत: पानी के बढ़ने पर भी वहीं खड़ी रही होंगी और तैरती रही होंगी।

देवेंद्र– एक प्रश्न मैं पूछता हूँ। महेंद्र तुम बताओ। एक घर का आधा दरवाजा खुला था तो आधा दरवाजा कैसे रहा होगा?

महेंद्र– बंद।

चाचाजी– बिलकुल ठीक। अब सुनो एक रोचक प्रश्न। यह तो तुम जानते ही हो कि दशहरे के बीस दिन बाद दीपावली आती है– अर्थात् दोनों के बीच केवल बीस दिन का अंतर होता है। बताओ, दीपावली से दशहरे के बीच कितने दिनों का अंतर होता है?

मनीष– बीस दिन का।

चाचाजी– क्या कहा, बीस दिन का! कदापि नहीं। दीपावली के बाद दशहरा पूरे तीन सौ पैंतालीस दिनों के अंतर के बाद ही आता है।

चुन्नू– एक मजेदार प्रश्न पूछता हूँ। एक साधु अपने पाले हुए शेर के बच्चे, एक बकरी के बच्चे और घास के एक गट्ठर के साथ एक नदी पार करना चाहता है। किन्तु वहाँ उपलब्ध नाव इतनी छोटी है कि उसमें दो से अधिक व्यक्ति या वस्तुएँ एक बार में सवार ही नहीं की जा सकतीं। यदि साधु पहली बार में ही घास का गट्ठर ले जाता है तो उस पार शेर बकरी को मार डालेगा। यदि शेर को साथ ले जाता है तो बकरी घास को खा जाएगी। वह नहीं चाहता है कि उसे किसी भी प्रकार का नुकसान हो। भला बताओ कि साधु को किस युक्ति से कार्य करना चाहिए कि उसे कोई हानि न हो?

सभी बच्चे– यह तो बड़ा अटपटा प्रश्न है। चाचाजी! आप ही इसका उत्तर बताइए न।

चाचाजी–नहीं बता सके न! तो सुनो उत्तर। साधु पहली बार में अपने साथ बकरी को ले जाएगा। इस पार रहेंगे घास और शेर का बच्चा। शेर घास नहीं खा सकता, इसलिए किसी हानि की संभावना नहीं है। साधु बकरी को रखकर आएगा और इस बार अपने साथ घास ले जाएगा। घास को उस पार रख देगा: किंतु वापसी में बकरी को पुन: इसी पार छोड़कर शेर को ले जाएगा और उस पार छोड़ आएगा। अब अकेला वापस आ जाएगा। इस प्रकार नदी पार करने में उसे कोई भी हानि नहीं होगी।

चुन्नू– अच्छा, अब एक प्रश्न मेरा भी सुनिए। वह कौन है, जो सदा हमको दूसरों की मधुर आवाज ही सुनाता है और यदि वह स्वयं अपनी आवाज में बोलने लगे तो हम उसे जरा भी पसंद नहीं करते और शीघ्र ही उसे ठीक कराने पहुँच जाते हैं?

मनीष– यह तो रेडियो है। अगर वह खर्र–खर्र करने लगे– अर्थात् अपनी स्वयं की भाषा में बोलने लगे तो हम जल्दी ही उसे ठीक कराना पसंद करते हैं। ठीक है न!

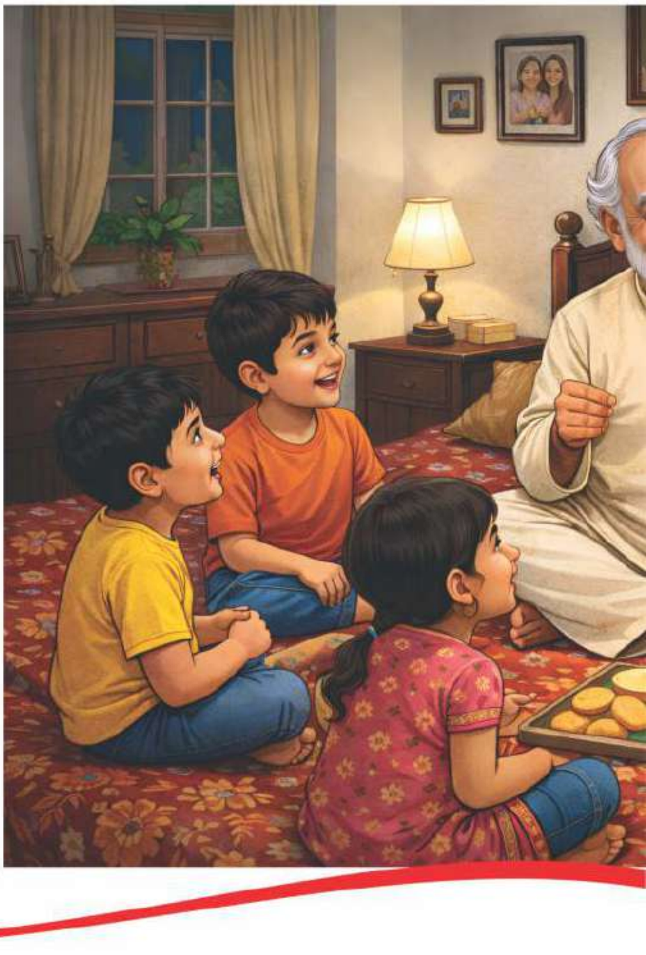

सभी बच्चे– हाँ!

चाचाजी– महेंद्र! तुम भी कोई प्रश्न पूछना चाहते हो?

महेंद्र– बताओ चुन्नू, एक गिलास में आधा पानी भरा हुआ है तो उनके शेष भाग में क्या भरा हुआ है?

चुन्नू– ऊपर के आधे भाग में हवा। ठीक है न।

चाचाजी– अच्छा भाई मनीष! बताओ– वह कौनसी वस्तु है जो काँटों पहाड़ों और पत्थरों की भी बिलकुल परवाह नहीं करती; किंतु पानी से वह घबराती है और लाचार होकर हमें उसको अपने हाथों में ले जाना पड़ता है। सुनो, बड़ी उपयोगी है वह। (रुककर) भाई मनीष! किन विचारों में खोए हो? अच्छा भाई, चुन्नू, तुम ही बताओ।

चुन्नू– ये तो हैं चमड़े के जूते। नदी–नाला आदि पार करते समय उन्हें पाँवों से निकालना ही पड़ता है। अन्यथा पानी में इनके खराब होने का डर रहता है। (रुककर) अच्छा चाचाजी! बताइए, किसे घूमते देर नहीं लगती और किसे फैलते देर नहीं लगती? (रुककर) घंटे भर तक मत सोचिए, जरा जल्दी से सोचकर बताइए।

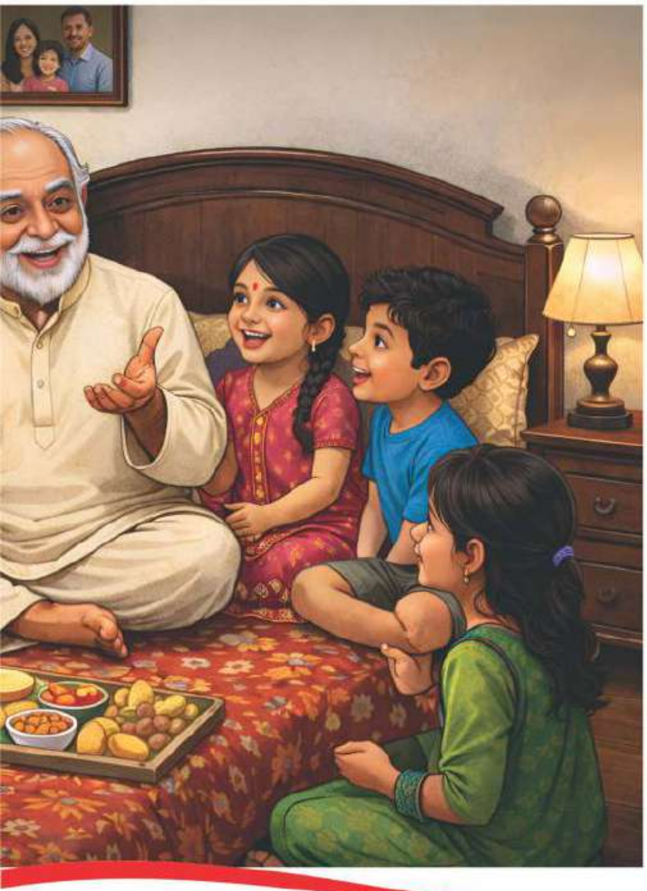

चाचाजी– अरे भाई! चक्के। उन्हें घूमते देर नहीं लगती और उसी प्रकार अफवाहों को फैलते देर नहीं लगती। इसीलिए तो अफवाहों से सावधान रहने के लिए कहा जाता है। (रुककर) अच्छा बताओ, वह कौनसा कार्य है जिसे कभी भी बिना सोचे–समझे नहीं करना चाहिए?

चुन्नू– बिना सोचे–समझे कभी भी जीभ को तालू में नहीं लगाना चाहिए, अर्थात् बिना सोचे–समझे नहीं बोलना चाहिए नहीं तो जग में हमारी हँसी होती है।

चाचाजी– और सुनो एक आश्चर्यजनक बात– बिजली के खंभे पर से वायर अर्थात् बिजली को रस्सी की सहायता से पाँच फीट नीचे की ओर एक बल्ब लटकाया। नीचे जमीन थी, किंतु फिर भी बल्ब टूटा क्यों नहीं?

चुन्नू– अरे चाचाजी, क्यों चक्कर दिलवा रहे हो? बिजली के खंभे प्राय: बीस–पच्चीस फीट ऊँचे होते हैं। यदि इतनी ऊँचाई से हम एक बल्ब मात्र पाँच फीट नीचे की ओर फेकेंगे तो जमीन के नीचे होने पर भी भला वह क्यों टूटेगा? निश्चित ही वह बीच में लटका रहेगा।

चाचाजी– अच्छा भाई देवेंद्र! बताओ– पान क्यों सड़ जाता है? घोड़ा चलते–चलते क्यों अड़ जाता है? हम याद किया हुआ क्यों भूल जाते हैं? और आग पर रखी हुई रोटी क्यों जलते लगती है?

साधना– क्योंकि फेरा नहीं गया। इन सबका कारण है पलटाना, घुमाना या दोहराया न जाना। यदि हम इसे समय–समय पर दोहराते रहें तो हमें कोई

हानि नहीं होगी और हम सदा उसे याद रख सकते हैं।

चाचाजी– अच्छा भाई! बताओ, किन संकेतों के करते रहने से बातचीत आगे बढ़ती है और किन बातों के करते रहने से झगड़ा हो जाता है? तुम बताओ, रजनीश।

रजनीश– नहीं बता सकता।

मनीष– मैं बताता हूँ। हाँ–हाँ, हूँ–हूँ करते रहने से बातचीत आगे बढ़ती रहती है और तू–तू, मैं–मैं अर्थात् आरोप लगाते रहने से झगड़ा हो जाता है।

चाचाजी– अच्छा, अब एक और किंतु आखिरी प्रश्न हम पूछ रहे हैं। बताओ, वह कौनसा काम है जो दो हाथों के बिना संभव नहीं होता?

सभी बच्चे– ताली बजाना।

चाचाजी– अच्छा, सब बच्चे ताली तो बजाओ। (सब बच्चे ताली बजाते हैं। पर्दा गिरता है।)

– खण्डवा (म. प्र.)

प्रसंग

प्रजापालक

– महेश परमार

एक बार महाराजा अशोक के राज्य में अकाल पड़ा। जनता भूख तथा प्यास से त्रस्त हो उठी। राजा ने तत्काल राज्य में अन्न भंडार खुलवा दिए। सुबह से लेने वालों का ताँता लगता और शाम तक न टूटता। एक दिन संध्या हो गई। जब सब लेने वालों का ताँता टूटा तब एक कृशकाय वृद्ध उठा और उसने अन्न माँगा, बाँटने वाले भी थक चुके थे, अतः उन्होंने उसे डाँटकर कहा– ''कल आना आज तो अब खैरात बंद हो गई।''

तभी एक हृष्ट–पुष्ट शरीर का नवयुवक जैसा व्यक्ति और बाँटने वालों से कहा– ''बेचारा वृद्ध है। मैं देख रहा हूँ बड़ी देर से बैठा है यह, शरीर से दुर्बल होने के कारण सबसे पीछे रह गया है इसे अन्न दे दो।''

उसकी वाणी में कुछ ऐसा प्रभाव था कि बाँटने वालों ने उसे अन्न दे दिया। उस नवयुवक की सहायता से गठरी बाँध ली। अब उठे कैसे? तब वही युवक बोला– ''लाओ, मैं ही पहुँचाए देता हूँ।'' और गठरी उठाकर पीछे–पीछे चलने लगा।

बुढ़े का घर थोड़ी दूर पर रह गया था, तभी एक सैनिक टुकड़ी उधर से गुजरी। टुकड़ी के नायक ने घोड़े पर से उतरकर गठरी ले जाने वाले फौजी को अभिवादन किया। उस व्यक्ति ने संकेत से आगे कुछ बोलने को मना कर दिया। फिर भी बूढ़े की समझ में कुछ–कुछ आ गया। वह वहीं खड़ा हो गया और कहने लगा– ''आप कौन हैं? सच–सच बताइए।''

वह व्यक्ति बोला– ''मैं एक नौजवान हूँ और तुम वृद्ध हो, दुर्बल हो। बस, इससे अधिक परिचय व्यर्थ है। चलो, बताओ तुम्हारा घर किधर है?'' पर अब तब बूढ़ा पूरी तरह पहचान चुका था। वह पैरों पर गिर गया और क्षमा माँगते हुए बड़ी कठिनाई से बोला– ''प्रजापालक! आप सच्चे अर्थों में प्रजापालक हैं।''

– शाजापुर (म. प्र.)

लाल बुझक्कड़ काका के कारनामें

-देवांशु वत्स

शरारती बालक

– माणक तुलसीराम गौड़

एक परिवार में एक शरारती बालक रहता है। नाम है उसका विशु और आयु यही कोई आठ वर्ष।

शरारत उसके स्वभाव में ही निहित है, जैसे काँटों में चुभन और आग में जलन। झगड़ा करता है और कहता है कि मैं तो शांतिप्रिय हूँ। छेड़खानी करता है और कहता है कि मैं तो विनोदप्रिय हूँ।

एक दिन वह गली-मुहल्ले के बच्चों के साथ खेल रहा था। खेल-खेल में ही उसका बच्चों के साथ खेल रहा था। खेल-खेल में ही उसका बच्चों के साथ पहले वाद-विवाद फिर तू-तू, मैं-मैं और अन्त में मारपीट कर वह घर आ गया। उसकी माँ को पता चला तो, उसने उसे डाँटा और समझाया- ''खेल-खेल में झगड़ना, मारपीट करना, गालियाँ निकालना बुरी आदत है, अब इससे बाज आओ। तुम बड़े हो गये हो।

शाला की पुस्तकों में भी अपने सहपाठियों से प्रेम करना सिखाया जाता है।'' पर उस चिकने घड़े पर क्या असर होता।

तब उसने कहा- ''यदि मैं उन्हें नहीं मारता तो वे मुझे मारते।''

माँ- ''ऐसे बच्चों के साथ खेलना बन्द करो, जो झगड़ालू स्वभाव के हैं। हमेशा अच्छे स्वभाव वाले बच्चों को ही अपना मित्र बनाओ और उनसे अच्छी आदतें सीखो।''

जब उसने भविष्य में कभी भी ऐसी गलती नहीं दोहराने का वादा किया तो उसकी माँ ने उसे घर के पूजा स्थान पर ले जाकर हनुमानजी की तस्वीर के सामने उससे संकल्प दिलवाया।

तब माँ बोली- ''सुन बेटा विशु! आज तुमने हनुमानजी महाराज के आगे संकल्प लिया है। गलत आदतें छोड़ने की प्रतिज्ञा ली है। यदि तूने इस प्रतिज्ञा को तोड़ा तो हनुमानजी तुझे क्षमा नहीं करेंगे।'' और वह बात वहीं समाप्त हो गई।

परन्तु विशु को लगा कि एक अकेला भगवान और इतनी बड़ी दुनिया और इतने सारे लोग, वह बेचारा किस-किस का ध्यान रखता होगा। चलो, प्रतिज्ञा लेकर आज तो छूटे, आगे की आगे देखी जाएगी। वही हनुमानजी वाली बात जो लंका में उन्होंने रावण की सभा में यह पूछने पर कही भी कि तूने राक्षसों को क्यों मारा- 'जिन्ह मोहि मारा ते मैं मारे' की तर्ज पर और वह मन ही मन सोचने लगा कि उस कालू के बच्चे को तो मैं कल पीटूँगा ही जिसने मुझे आज गाली दी थी।

इतने में वह क्या देखता है कि सामने के एक बहुत बड़े पीपल के पेड़ पर बंदरों का झुंड बैठा है और उसमें से बंदर एक-एक करके छलांग लगा-लगाकर उसकी छत पर और फिर नीचे आ रहे हैं, जहाँ उसका

निवास है।

उसने तुरन्त अपनी चतुराई से चीते की तरह झपटते हुए दरवाजा जो खुला पड़ा था, बन्द करने के लिए उसे धकेलने लगा, परन्तु दरवाजा पूरी तरह से ढका नहीं जा रहा था ताकि बंद करके सिटकनी लगाई जा सके। वह जोर लगाता जा रहा था, परन्तु ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो सामने से उस दरवाजे को विपरीत दिशा में कोई धकेल रहा हो। उसने फिर अपनी दुगुनी ताकत लगाई तो सामने से भी उतनी ही ताकत लगाने का अनुभव हुआ। अब वह घबरा गया था। पसीने से तर–बतर हो गया। आँखों के आगे अँधेरा छाने लगा। दिन में तारे चमकते दिखाई देने लगे। उसका गला सूख गया था। फिर भी हिम्मत बटोरकर अपनी माँ को पुकारा, जिसे हर कोई बच्चा संकट के समय पुकारता है।

''माँ–माँ! मुझे बचाओ। बस आज के दिन मुझे बचा लो, माँ! फिर मैं ऐसी गलती कभी नहीं करूँगा। देखो माँ! जल्दी आओ। ये सारे बंदर घर के अंदर आना चाहते हैं। मैं दरवाजा बंद करना चाहता हूँ और ये बंद नहीं करने दे रहे हैं।''

अपने लाल की संकट भरी आवाज सुनकर माँ वहाँ सरपट दौड़ी–दौड़ी आई और देखती है कि विशु दरवाजे को बंद करने की पूरी ताकत से प्रयत्न कर रहा है, परन्तु दरवाजा बंद नहीं हो पा रहा है। माँ ने उस थोड़े से खुले दरवाजे से झाँककर देखा तो बात समझ में आई। दरवाजे और देहलीज के बीच रबर की चप्पल आने से दरवाजा बंद नहीं हो पा रहा था और विपरीत दिशा से जोर लगाने का आभास हो रहा था।

यह बात माँ ने शांतिपूर्वक अपने लाल को समझाई तो उसके जान में जान आई और संतोष की साँस ली।

– मुंबई (महाराष्ट्र)

पहेलियाँ

सांस्कृतिक पहेलियाँ

– गोविन्द भारद्वाज

१)
श्रीकृष्ण ने अर्जुन को,
दिया अनुपम संदेश।
बतलाओ बच्चों है वो,
कौन–सा शुचि उपदेश।

२)
रामायण अति पावन,
लिखी बताओ किसने?
छोड़ पाप सारे निज,
नाम कमाया उसने।

३)
तुलसी का अनुपम ग्रंथ,
किया राम का गुणगान।
सकल विश्व में जिसका,
होता है आदर–सम्मान।

४)
लिखा अर्थशास्त्र जिसने,
थे प्रकांड विद्वान।
कौटिल्य के रूप में भी,
इतिहास में है पहचान।

५)
मीराबाई के गुरु कहलाए,
भेद नहीं था किसी पंथ का।
जल्दी से नाम बताओ जी,
भक्ति युग के महान संत का।

– अजमेर (राजस्थान)

उत्तर– १) गीता का उपदेश। २) वाल्मिकी। ३) रामचरितमानस। ४) चाणक्य। ५) रैदास (रविदास)।

पुस्तक परिचय

कुहू

मूल्य– १२५/–

श्री. राजा चौरसिया बाल साहित्य के वरिष्ठ रचनाकार हैं बाल साहित्य की समस्त विधाओं पर साधिकार कलम चलाने वाले इस वयोवृद्ध अनुभवी साहित्य शिल्पी ने आपके लिए ४० शिशु एवं बाल गीतों की पुस्तक प्रस्तुत की है।

प्रकाशक– पाथेय कण प्रकाशन, जबलपुर (म. प्र.)

रोशनी के पंख

मूल्य– १८०/–

श्रीमती सुधा भार्गव बाल कहानीकारों में जाना–माना हस्ताक्षर हैं आपकी कहानियाँ बालमन की परतों के अन्दर छुपे विविध भावों–विचारों के प्रकट करती है। इस संकलन में २० बहुरंगी बाल कहानियाँ हैं।

प्रकाशक– प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार, सूचना भवन, सीजीओ, काम्प्लेक्स लोदी रोड, नई दिल्ली–११०००३

किताबों से बातें

मूल्य– १७५/–

श्रीमती रोचिका अरूण शर्मा समकालीन बाल रचनाकारों में एक सुख्यात नाम है। १५ रोचक बाल कहानियों के साथ रोचिका जी ने इस बहुरंगी कहानी संकलन में बाल मनोमस्तिष्क की संवेदनाओं व अनुभूतियों को गहरे स्पर्श किया है।

प्रकाशक– प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार, सूचना भवन, सीजीओ कॉम्प्लेक्स, लोदी रोड, नई दिल्ली–०३

कभी न हिम्मत हारो

मूल्य– २९९/–

डॉ. वेदप्रकाश अग्निहोत्री बाल साहित्य में सरस गीत रचनाओं के लिए विशिष्ट पहचान रखने वाले रससिद्ध गीतकार हैं। प्रस्तुत सचित्र गीत पुस्तक, आपके २५ बालगीतों की श्वेतश्याम चित्रों वाली सुन्दर प्रस्तुति है।

प्रकाशन–श्वेतवर्णा प्रकाशन, २१२–ए, एक्सप्रेस, न्यू अपार्टमेंट, सेक्टर–९३, नोएडा–२०१३०४ (उ. प्र.)

डॉ. वेदप्रकाश अग्निहोत्री की यह पुस्तक सदैव ही बाल मस्तिष्क को मथने और मन को गुदगुदाने वाली विधा पहेली पर केन्द्रित है। पुस्तक में आपकी रची अनेक विज्ञान पहेलियाँ बच्चों के लिए ज्ञानवर्द्धक मनोरंजन प्रदान करेंगी।

प्रकाशन–श्वेतवर्णा प्रकाशन २१२–ए, एक्सप्रेस, न्यू अपार्टमेंट, सेक्टर–९३, नोएडा–२०१३०४ (उ. प्र.)

सौरमंडल की सैर

– रिंकल शर्मा

सौरमंडल की हम संतान
अलग रंग और अलग है नाम
सबसे पहला, बड़ा और पीला
मैं सूरज हूँ, आग का गोला

दूजा मैं दुध, सूरज के पास खड़ा हूँ
दिखने में छोटा पर बलवान बड़ा हूँ
तीजा मैं शुक्र, हूँ बड़ा मजेदार
रहता गरम मगर हूँ चमकदार

चौथी मैं पृथ्वी, मेरा रंग है नीला
मुझ पर ही होती जीवन लीला
पाँचवा मैं मंगल हूँ मालामाल
नरम मेरी मिट्टी, रंग है लाल

छठा मैं बृहस्पति हूँ बेमिसाल
गैसों का गोला, बड़ा ही विशाल
सातवाँ मैं शनि, मेरी बात अनूठी
अपने चारों ओर, पहनू मैं अँगूठी

आठवाँ अरुण, मैं हूँ रंगीला
सत्ताईस उपग्रहों से रहूँ सजीला
नौवाँ वरुण, मेरी नीली शान
हूँ सबसे दूर, लिए शीतल मुस्कान

सौरमंडल की हम संतान
अलग रंग चाहे अलग है नाम
हम ही सृष्टि का आधार
हम ही हैं ब्रह्माण्ड की जान।

– कौशाम्बी (उ. प्र.)

दीपू का मोबाइल

– अर्चना त्यागी

शाला की छुट्टियाँ प्रारंभ हुई तो रीता ने अपनी माँ के घर जाकर रहने की घोषणा कर दी। दोनों बच्चे दीपू और चीकू भी उछल पड़े। नानी के पास जाने से अधिक दूसरी कोई भी बात उन्हें छुट्टियों में पसंद नहीं आती थी। नाना–नानी एक बड़े से घर में रहते थे। उन्होंने दो गायें भी रखी हुई थीं।

उनके घर के उद्यान में बहुत से पेड़ थे। छुट्टियों में आम के पेड़ पर खूब आम आते थे। बच्चों को उनका स्वाद भी खूब भाता था। ट्रेन में यात्रा करके दोनों बच्चे चहकते हुए अपनी नानी के घर पहुँचे। नानी की खुशी का ठिकाना नहीं था। वर्षभर वे दोनों छुट्टियों की प्रतीक्षा करते। यही वह समय था जब वे अपने दोनों नटखट नातियों से मिल पाते थे। इतने बड़े घर में दिनभर कूद फाँद करके, गाय के बछड़ों के साथ खेलकर रात में नानाजी के पास ही दोनों ने अपनी चारपाई बिछा ली। कहानी सुनने का समय जो आ गया था। रीता ने दीपू की शिकायत करते हुए बताया कि वह दिनभर मोबाइल में गेम खेलता रहता है। ऑनलाइन पढ़ाई के दौरान ही उसने कई गेम डाउनलोड कर लिए थे। अब जब भी समय मिलता मोबाइल के साथ ही समय बिताता था।

नाना ने पूछा–''रीता! क्या तुम भी मोबाइल अधिक समय तक उपयोग करती हो?'' रीता सकपकाई पर उसने ईमानदारी से अपने पिताजी के प्रश्न का उत्तर दिया– ''पिताजी! कार्यालय के काम से घर पर भी मोबाइल से काम करना पड़ता है। मैसेज चेक करते रहना पड़ता है।'' दीपू ध्यान से दोनों की बातें सुन रहा था। ''नानू! पहले कहानी सुनाओ ना।'' उसने जोर से कहा। चीकू ने भी उसकी बात का समर्थन किया। नानू ने कहानी प्रारंभ की। ''किसी गाँव में एक छोटा बच्चा रहता था। बहुत अच्छा बच्चा था लेकिन उसे एक लत पड़ गई। वह बहुत अधिक मात्रा में मिठाई खाने लगा। उसके माता पिता चिंतित थे। गाँव के बाहर एक साधु कुटिया बनाकर रहता था। गाँव वालों की समस्या का समाधान भी किया करता था। बच्चे के माता–पिता उसे लेकर साधु के पास गए और अपनी परेशानी बताई। साधु ने बच्चे को कुछ दिनों के लिए अपनी कुटिया में छोड़ देने को कहा।

उसके माता पिता ने कारण पूछा तो उन्होंने बताया– ''हम जिस काम को स्वयं करना नहीं छोड़ सकते हैं, दूसरों से भी नहीं छुड़वा सकते हैं। मैं कंद–मूल का सेवन करता हूँ। मेरे साथ कुछ दिन रहेगा तो तुम्हारा बेटा भी वही खाएगा। इस तरह इसकी मिठाई खाने की आदत छूट जाएगी।'' बच्चे के माता–पिता साधु की बात समझ गए और उन्होंने प्रण किया कि वे घर में तब तक मिठाई नहीं रखेंगे जब तक उनके बेटे की आदत नहीं छूट जाती है। कहानी सुनकर नानू ने रीता की ओर देखकर कहा– ''दीपू को कुछ दिनों तक मेरे पास रहने दो। मेरे पास कोई मोबाइल नहीं है। इसकी भी आदत छूट जाएगी। रीता को अपनी समस्या का समाधान मिल गया था। बच्चे कहानी सुनकर सो चुके थे।

– मुजफ्फरनगर (उ. प्र.)

इस तरह बनाओ

बारहसिंगा

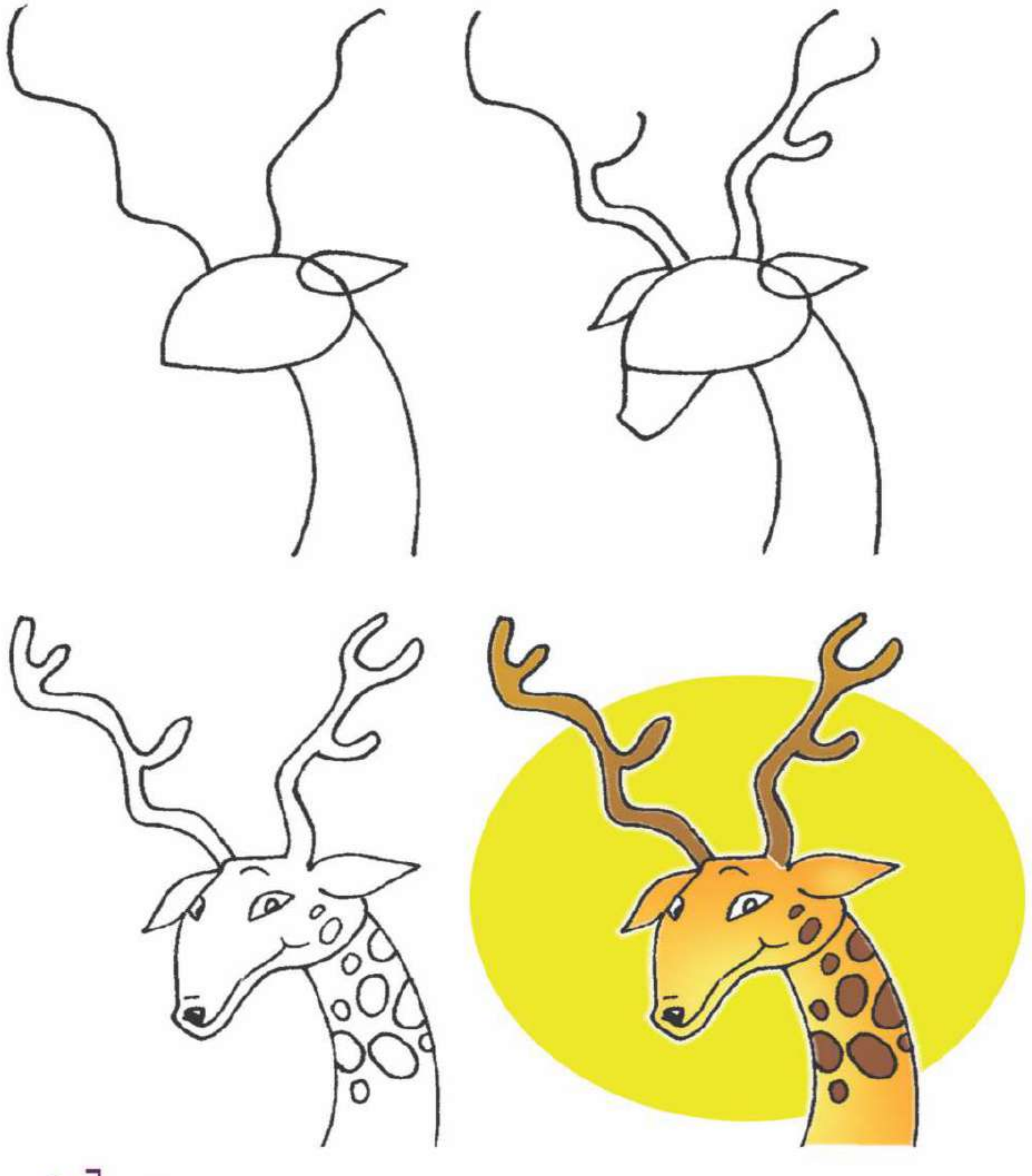

मध्यप्रदेश के महामहिम राज्यपाल मंगूभाई पटेल जी को देवपुत्र का संघ परिचय अंक भेंट करते हुए श्री. रवीन्द्र जी कान्हेरे, श्री. शशिकांत जी फडके, श्री. निखिलेश जी महेश्वरी एवं न्यास के कोषाध्यक्ष श्री. मोहनलाल जी गुप्ता

छत्तीसगढ़ के महामहिम राज्यपाल श्री. रमन डे का को लोक भवन में देवपुत्र का संघ परिचय अंक भेंट करते हुए डॉ. देवनारायण जी साहू

त से तरबूज

- चाँद मोहम्मद घोसी

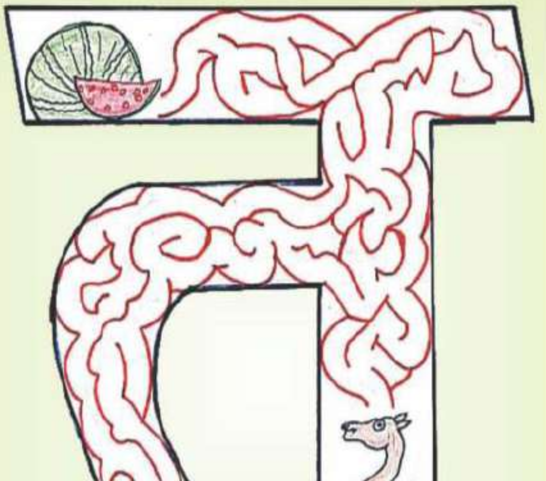

राजस्थान के रेगिस्तानी जंगल में रेगिस्तान का जहाज ऊँट भूखा-प्यासा इधर-उधर भटकता फिर रहा है। एक स्थान पर उसे हरा-भरा लाल रंग का कटा हुआ तरबूज दिखाई दे रहा है। जिसे खाकर ऊँट अपनी भूख मिटाना चाहता है। प्रिय बच्चों, आप बेचारे ऊँट को तरबूज के निकट पहुँचाने का कष्ट करें।

- मेड़ता सिटी
(राजस्थान)

आम के बच्चे आए

- राम करन

वसंत आया और आम के,
बच्चे आए हैं।
तादाद हजारों हैं और सब,
अच्छे आये हैं।
टहनी-टहनी सबके सब,
झूले झटके हैं।
डाल पकड़ कर पूँछ से,
नीचे लटके हैं।
मंथर-मंथर हवा में हिलते,
बंदर लगते हैं।
अपने धुन में मस्त-मगन,
कलंदर लगते।
अभी हरे हैं धीरे-धीरे,
पीले हो जाएँगे।
जितने कच्चे-कड़े हैं,
ढीले हो जाएँगे।

- बस्ती (उ. प्र.)

देवपुत्र द्वारा आयोजित प्रतियोगिताओं के परिणाम वर्ष २०२५

डॉ. परशुराम शुक्ल बाल साहित्य प्रतियोगिता २०२५

विषय– भारतीय कुटुंब व्यवस्था केन्द्रित बाल कहानियाँ

प्रथम–कीर्ति श्रीवास्तव, भोपाल (म. प्र.) पुरस्कार राशि–	१५००/–
द्वितीय– पद्मा चौगाँवकर, गंजबासौदा (म. प्र.) पुरस्कार राशि–	१२००/–
तृतीय– हरीश कुमार 'अमित', गुरूग्राम (हरि.) पुरस्कार राशि–	१०००/–
प्रोत्साहन– १) किशोर श्रीवास्तव, नोएडा (उ. प्र.) पुरस्कार राशि–	५००/–
२) मीरा जैन, उज्जैन (म. प्र.) पुरस्कार राशि–	५००/–

श्री. भवालकर स्मृति कहानी प्रतियोगिता २०२५

प्रथम–किसलय भारद्वाज, कैथा (बिहार) पुरस्कार राशि–	१५००/–
द्वितीय– अनुराग कुमार, पटना (बिहार) पुरस्कार राशि–	११००/–
तृतीय– हर्षिका कुमारी, तरणीडीह (झारखंड) पुरस्कार राशि–	१०००/–
प्रोत्साहन– १) ऋतु चौहान, रायगढ़ (छ. ग.) पुरस्कार राशि–	५००/–
२) गायत्री कँवर, माजीवाला (राजस्थान) पुरस्कार राशि–	५००/–

केसर पूरन स्मृति पुरस्कार २०२५

चयनित कृति

गुल्लक बाल कथाओं की– डॉ. सुनीता फडनीस इन्दौर (म. प्र.)

पुरस्कार राशि– २१००/–

मायाश्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार २०२५

(मायाश्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार २०२५ हेतु कोई प्रविष्टि प्राप्त नहीं हुई।)

कविता

आम ने देखा सपना

– सुशीला साहू

गर्मी का है मौसम आया,
पके आम तो सबको भाया।
नानी मेरी घर आई थी,
आम खूब वो भर लाई थी।।

खट्टा–मीठा बड़ा रसीला,
छिलका उसका पीला–पीला।
सबने आम चूस कर खाया,
गुठली को बाहर छितराया।

इधर–उधर वह दौड़ लगाती,
सब के पैरों में ठुकराती।
शीलू उसे मिट्टी में बोयी,
गुठली अब सपनों में खोयी।।

जैविक खाद खूब खाऊँगी,
नन्हा अंकुर बन जाऊँगी।
हरी–भरी सब टहनी होगी,
खूब हवा में लहराऊँगी।।

पेड़ बड़ा मैं बन जाऊँगी,
काम सभी के फिर आऊँगी।।

– रायगढ़ (छत्तीसगढ़)

डाक पंजीयन : एम.पी./आय.डी.सी./६२३/२०२४-२०२६ आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५
प्रकाशन तिथि २०/०३/२०२६ प्रेषण तिथि ३०/०३/२०२६ प्रेषण स्थल- आर.एम.एस., इन्दौर

देवपुत्र का सदस्यता शुल्क है।

एक अंक ३०/- वार्षिक सदस्यता २५०/- १५ वर्षीय सदस्यता २५००/-

एक ही पते पर १० या अधिक अंक एक साथ मँगवाने पर वार्षिक शुल्क १८०/- प्रति अंक

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल
'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

बाल साहित्य और संस्कारों का अग्रदूत

सचित्र प्रेरक बाल मासिक
देवपुत्र सचित्र प्रेरक बहुरंगी बाल मासिक

स्वयं पढ़िए औरों को पढ़ाइए

उत्तम कागज पर श्रेष्ठ मुद्रण एवं आकर्षक साज-सज्जा के साथ

अवश्य देखें- वेबसाईट : www.devputra.com

स्वामी सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर, म. प्र. के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक राकेश भावसार द्वारा अजीत प्रिन्टर्स एंड पब्लिशर्स, २०-२१, प्रेस कॉम्प्लेक्स, ए. बी. रोड, इन्दौर, म. प्र. से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, नवलखा, इन्दौर, म. प्र. से प्रकाशित सम्पादक - गोपाल माहेश्वरी